RNI-CHHBIL/2022/82492

हरितांजलि एक्सप्रेस

■ वर्ष-1 ■ अंक-9 रायपुर, फरवरी 2023 हिन्दी/अंग्रेजी मासिक रायपुर से प्रकाशित पृष्ठः 32, मूल्य 35/- रुपए

सरलता, सहजता और भाईचारा छत्तीसगढ़ की पहचान- मुख्यमंत्री भूपेश बघेल

रायपुर ग्रामीण विधायक सत्यनारायण शर्मा से एक मुलाकात के दौरान सम्पादक सीमा दुबे हरितांजलि एक्सप्रेस और अमरधारी मिश्रा दैनिक उगता छत्तीसगढ़ के सम्पादक ने उनसे मुलाकात की.

राजस्थान पत्रिका के संपादक आचार्य गुलाब कोठारी जी अपने बुक चिंतन के महकते पुष्प का विमोचन करते हुए एक भेट मुलाकात के दौरान सम्पादक सीमा दुबे हरितांजलि एक्सप्रेस और अमरधारी मिश्रा दैनिक उगता छत्तीसगढ़ के सम्पादक ने उनसे मुलाकात की.

हरितांजलि एक्सप्रेस

RNI. CHHBIL/2022/82492

हिन्दी/अंग्रेजी
मासिक पत्रिका
● वर्ष-1 ● अंक- 9
फरवरी 2023 (मासिक)
रायपुर (छत्तीसगढ़)

- संपादक
  श्रीमती सीमा दुबे
- सलाहकार संपादक मंडल
- अमरधारी मिश्रा
- नवीन दुबे
- विधिक सलाहकार
  भरत सोनी (अधिवक्ता)
- तकनीकी सलाहकार मंडल
  आशीष मिश्रा, मनीष मिश्रा
- साज-सज्जा
  महिमा कम्प्यूटर, रायपुर

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **सीमा दुबे** द्वारा मिशन मीडिया प्रा.लि. छत्तीसगढ़ भवन, रजबंधा मैदान, जिला-रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रितकर बजरंग नगर, राधेश्याम आटा चक्की के पास, रायपुर, जिला-रायपुर (छत्तीसगढ़) पिन नं. 492001 से प्रकाशित.

संपादक -**सीमा दुबे** -मोबाईल-9424214250

Email-seema.dubey1824@gmail.com

सोच

सवाल संसद की गरिमा का

अगर संसद सामान्य ढंग से चलती, सामान्य अवधि तक चलती और सरकार उसके प्रति अपने को जवाबदेह दिखाती, तो प्रश्न नहीं उठते। अब जबकि आम चुनाव में लगभग एक साल का ही वक्त बचा है, बजट सत्र में इस पर नजर होगी कि क्या सत्ता पक्ष का कोई अलग व्यवहार देखने को मिलता है।

अब संसद के हर सत्र की शुरुआत पर संसद की गरिमा का सवाल चर्चा में आता है। जाहिरा तौर पर इसकी वजह गुजरे वर्षों में संसद के अंदर दिखी प्रवृत्तियां हैं। अगर कोई सरकार या सत्ताधारी पार्टी संसद की मर्यादाओं में बंधे रहना पसंद ना करती हो, वह वहां अपनी जवाबदेही निभाने को तैयार ना हो, तो इस तरह के प्रश्नों का उठ खड़ा होना लाजिमी है। यह ध्यान में रखने की बात है कि आजादी के बाद भारत ने जिस राजनीतिक व्यवस्था को अपनाया, उसे संसदीय लोकतंत्र के नाम से जाना जाता है। स्पष्ट है कि इस व्यवस्था के केंद्र में संसद है। संसद की रचना में पक्ष और विपक्ष दोनों की भूमिकाएं तय रहती हैं। किसी एक पार्टी (या गठबंधन) को सरकार चलाने का जनादेश प्राप्त होता है, तो बाकी दल या दलों को सरकारी फैसलों की खामियों को बेनकाब करने, उनका विरोध करने और सरकार को सत्ता से हटाने की रणनीति बनाने का अधिकार होता है। इन तीनों गतिविधियों से सत्ता पक्ष को जवाबदेह बनाने में मदद मिलती है।

आखिरकार एक तय कार्यकाल के बाद बात जनता की अदालत में जाती है, जहां मतदाता दोनों पक्षों के रिकॉर्ड पर अपना फैसला सुनाते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि लोकतंत्र में जितना महत्त्वपूर्ण सत्ता पक्ष होता है, उतना ही विपक्ष भी। दरअसल, दोनों शासन व्यवस्था का हिस्सा होते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि वर्तमान सत्ताधारी ने विपक्ष को दुश्मन के रूप में पेश करने की संस्कृति अपनाई है। इसीलिए यह आरोप लगा है कि भारतीय जनता पार्टी लोकतांत्रिक सीमाओं के भीतर सरकार चलाने के बजाय सिस्टम पर कब्जा करने की रणनीति पर चल रही है। अगर संसद सामान्य ढंग से चलती, सामान्य अवधि तक चलती और सरकार उसके प्रति अपने को जवाबदेह दिखाती, तो ऐसे प्रश्न नहीं उठते। अब जबकि संसद का बजट सत्र शुरू हुआ है, तो नजर यह देखने पर होगी कि जब अगले आम चुनाव में लगभग एक साल का ही वक्त बचा है, तब सत्ता पक्ष का कोई अलग व्यवहार देखने को मिलता है।

संपादक की कलम से

सुधार का विकल्प नहीं

अर्थशास्त्रियों ने कहा है कि आईएमएफ से मिली मदद फ़ौरी तौर पर समस्या का सिर्फ आंशिक समाधान है। वास्तवक समाधान तो आर्थिक नीतियों में ऐसा बदलाव लाकर ही हो सकता है, जिससे वित्तीय अनुशासन कायम हो और साथ ही दीर्घकालिक विकास का रास्ता तैयार हो।

आईएमएफ के बोर्ड ने अभी सिर्फ बांग्लादेश को राहत दी है। इससे यह संकेत जरूर मिला है कि बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था की बुनियाद पाकिस्तान और श्रीलंका से अधिक मजबूत है। लेकिन बांग्लादेश को भी कठिन सुधार लागू करने ही होंगे।

इस वक्त एक ऐसी स्थिति हमारे सामने है, जब भारत के तीन पड़ोसी देश आर्थिक संकट में फंस चुके हैँ। तीनों ने आस अंतरराष्टीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से जोड़ी, लेकिन बोर्ड ने अभी सिर्फ बांग्लादेश को राहत दी है। इससे यह संकेत जरूर मिला है कि बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था की बुनियाद पाकिस्तान और श्रीलंका से अधिक मजबूत है। पाकिस्तान और श्रीलंका का हाल यह है कि आईएमएफ ने उनके लिए जो कर्ज मंजूर किया है, उसकी रकम भी जारी नहीं हो पा रही है, क्योंकि ये दोनों देश आईएमएफ की शर्तों को पूरा करने में नाकाम रहे हैँ। जाहिर है, इसका एक बड़ा कारण उनकी आर्थिक बुनियाद का हिल जाना है। इस बीच इस हफ्ते आईएमएफ के बोर्ड ने बांग्लादेश को 4.7 बिलियन डॉलर का कर्ज भुगतान करने को मंजूरी दे दी। लेकिन विशेषज्ञों ने उचित चेतावनी दी है कि इस राहत से बांग्लादेश की आर्थिक मुश्किलें हल नहीं होंगी। इसलिए कि वहां भी ये समस्याएं अब काफी गंभीर रूप ले चुकी हैं। अर्थशास्त्रियों ने कहा है कि आईएमएफ से मिली मदद फ़ौरी तौर पर समस्या का सिर्फ आंशिक समाधान है। वास्तिवक समाधान तो आर्थिक नीतियों में ऐसा बदलाव लाकर ही हो सकता है, जिससे वित्तीय अनुशासन कायम हो और साथ ही दीर्घकालिक विकास का रास्ता तैयार हो।

बांग्लादेश के आर्थिक इंडिकेटर मिली-जुली तस्वीर पेश करते हैं। कुछ संकेतकों से स्थिति में सुधार की झलक मिली है। मसलन, पिछले नवंबर और दिसंबर में बांग्लादेश को कुल निर्यात से होने वाली आमदनी में तेजी से सुधार हुआ। लेकिन वस्त्र के मुख्य निर्यात की स्थिति अच्छी नहीं है। पिछले महीने वस्त्र निर्यात के ऑर्डर में 30 प्रतिशत गिरावट आई। कई मोर्चों पर सरकार के सामने कठिन फैसले लेने की चुनौती बनी हुई है। लेकिन इस चुनावी साल में ऐसे निर्णय लेना प्रधानमंत्री शेख हसीना वाजेद की सरकार के लिए आसान नहीं होगा। पहले ही सब्सिडी में लगातार कटौती से गैस, केरोसीन, बिजली और पानी के शुल्कों में काफी बढ़ोतरी हो चुकी है। सरकार इस वर्ष दो किस्तों में बिजली शुल्क में दस प्रतिशत से अधिक की वृद्धि कर चुकी है। लेकिन ऐसे कदम उठाने के अलावा उसके पास शायद कोई और चारा भी नहीं है।

आम बजट-23-24

आम से लेकर खास पर नजर

7 लाख तक की आय पर कोई टैक्स नहीं

नई दिल्ली । केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा बुधवार को लोकसभा में पेश वर्ष 2023-24 के आम बजट में मध्यम वर्ग, किसान, युवा, महिला की झोली में जमकर गिफ्ट गिराए हैं। अपने बजट भाषण में निर्मला सीतारमण ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, ओबीसी, युवा और महिलाओं के लिए योजनाओं की भरमार कर दी है। मध्यम वर्ग से लेकर किसानों के लिए योजनाएं के सौगात के जरिए मोदी सरकार ने मिशन 2024 के लिए कमर कस ली है। नयी योजनाओं के तहत घोषित प्रधानमंत्री विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना में पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों के लिए पहली बार सहायता पैकेज का प्रावधान किया गया है। यह योजना उन्हें अपने उत्पादों की गुणवत्ता, पैमाने और पहुंच में सुधार लाने तथा मूल्य श्रृंखला के साथ जुड़ने में मदद करेगी। योजना वित्तीय सहायता, उन्नत कौशल प्रशिक्षण, आधुनिक तकनीकी जानकारी, वैश्विक बाजारों के साथ संयोजन और सामाजिक सुरक्षा के प्रति सुलभता प्रदान करेगी। इससे अनुसूचित जातियों, जनजातियों, अन्य पिछड़ा वर्ग, महिला तथा कमजोर वर्ग के लोगों को फायदा होगा। इसी तरह बजट में कृषि क्षेत्र के लिए डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर बनाने की घोषणा की गयी है। इससे फसल नियोजन, रिण और बीमा, फसल आकलन के लिए सहायता, मार्केट इंटेलीजेंस, एग्री टेक इंडस्ट्री एव स्टार्ट अप के विकास के लिए समर्थन के माध्यम से समावेशी किसान केन्द्रित समाधान संभव हो पायेंगे। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि स्टार्ट अप खोलने को बढावा देने के लिए कृषि वर्धक निधि स्थापित की जायेगी । इस निधि का उद्देश्य किसानों की चुनौतियों का किफायती तरीके से समाधान उपलब्ध कराना है। यह कृषि पद्तियों को बदलने , उत्पादकता एवं लाभ को बढाने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी लेकर आयेगी। बच्चों और किशोरों के लिए अलग अलग क्षेत्रों , भाषाओं , विषयों और स्तरों में गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें विभिन्न उपकरणों के माध्यम से उपलब्ध कराने के लिए एक राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय की स्थापना की जायेगी। दूसरी और तीसरी श्रेणी के शहरों में अवसंरचना के लिए शहरी अवसंरचना विकास निधि की स्थापना की जायेगी। साथ ही देश में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए इकोसिस्टम बनाने के लिए शीर्ष शैक्षिक संस्थानों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए तीन उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किया जायेगा।

इससे गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधनों को प्रशिक्षित किया जा सकेगा।

बजट के अनुसार अगले तीन वर्षों में एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए सहायता दी जायेगी । राष्ट्रीय स्तर पर वितरित सूक्ष्म उर्वरक और कीटनाशक विनिर्माण नेटवर्क बनाते हुए 10 हजार बायो इनपुट संसाधन केन्द्र स्थापित किये जायेंगे।

वित्तीय और संबंधित सूचना की केन्द्रीय रिपोजटरी के रूप में काम करने के लिए एक राष्ट्रीय वित्तीय सूचना रजिस्ट्री स्थापित की जायेगी। इससे रिण का प्रवाह बढेगा , वित्तीय समावेशन को बढावा मिलेगा और वित्तीय स्थिरता बढेगी।

आजादी के अमृत महोत्सव की याद में मार्च 2025 तक दो वर्ष की अवधि के लिए नयी लघु बचत योजना , महिला बचत प्रमाण पत्र उपलब्ध कराया जायेगा। यह महिलाओं या बालिकाओं के लिए होगा और दो वर्ष की अवधि के लिए इसमें 7.5 प्रतिशत की दर से ब्याज दिया जायेगा।

बजट से पूरा होगा हर वर्ग का सपना

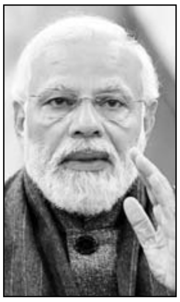

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बजट 2023 को लेकर अपने संबोधन में कहा कि करोड़ों विश्वकर्मा इस देश के निर्माता हैं। मूर्तिकार, शिल्पकार यह सभी देश के लिए मेहनत करते हैं। देश इस बजट में पहली बार अनेक प्रोत्साहन योजना लेकर आया है। ऐसे लोगों के लिए टेक्नोलॉजी, क्रेडिट और मार्केट की योजना की गई है। पीएम विश्वकर्मा योजना इन विश्वकर्माओं के विकास लिए बड़ा बदलाव लाएगा। उन्होंने कहा, गांव में रहने वाली महिलाओं से लेकर शहरी महिलाओं के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं। ऐसे कदमों को पूरी ताकत से आगे बढ़ाया जाएगा। इसके अलावा महिलाओं के सेल्फ हेल्प ग्रुप भारत में बड़ी जगह अपने लिए ले चुका है। इन्हें संबल देने के लिए नई पहल बजट में शामिल की गई है। महिलाओं के लिए एक विशेष बजट योजना भी शुरू की जा रही है। जन धन खातों के बाद यह विशेष बचत योजना सामान्य परिवार की माताओं को बड़ा फायदा देने वाली है। उन्होंने कहा, हम मिलेट्स (बाजरा) के लिए बड़ी योजना लेकर आए हैं। जब यह घर-घर पहुंच रहा है, पूरी दुनिया में पॉपुलर हो रहा है, तो इसका सबसे ज्यादा फायदा भारत के किसानों को होना है।

महिलाओं के लिए नई बचत स्कीम का ऐलान

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को महिला सम्मान बचत पत्र की घोषणा की है। सीतारमण के अनुसार, महिलाओं के लिए नई बचत स्कीम में 7.5 फीसदी की निश्चित दर से ब्याज मिलेगा। यानी यह फिक्स्ड टर्म सेविंग इंस्ट्रूमेंट है। ऐसे में इसमें निवेश करने का फैसला अन्य छोटी बचत स्कीमों में तुलना करके लिया जा सकता है। स्कीम के तहत किसी महिला या लड़की के नाम दो साल के लिए डिपॉजिट किया जा सकता है। इसमें पॉर्शियल विदड्रॉल का भी ऑप्शन है। महिलाओं के लिए शुरू की गई यह छोटी बचत स्कीम एक बारगी के लिए है। इसमें 2 साल के लिए 2025 तक निवेश किया जा सकेगा। आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में इस स्कीम का ऐलान किया गया है।

इसमें 2 लाख रुपये तक डिपॉजिट की सुविधा है।

मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का आखिरी पूर्ण बजट

बता दें कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज मोदी सरकार का आखिरी पूर्ण बजट पेश किया है। ये मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का आखिरी पूर्ण बजट है। इस साल का बजट बहुत मायने रखता है, क्योंकि देश में अप्रैल-मई 2024 में अगला लोकसभा चुनाव होना है।

सप्तऋषि... सात प्राथमिकताओं का बजट

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए बजट पेश कर दिया है। वित्त मंत्री ने अपने भजट भाषण के दौरान 'सप्तऋषि' का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि देश के विकास का यही आधार होगा। वित्त मंत्री ने मौजूदा समय को अमृतकाल बताया और कहा कि इस अमृतकाल में सात प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए देश का विकास होगा। इन सात प्राथमिकताओं को ही सप्तऋषि नाम दिया गया है।

1. समावेशी विकास, 2. वंचितों को वरीयता, 3. बुनियादी ढांचे और निवेश

4. क्षमता विस्तार , 5. हरित विकास, 6. युवा शक्ति, 7. वित्तीय क्षेत्र

रेलवे सेक्टर के लिए 2.40 लाख करोड़ का बजट

रेलवे सेक्टर के लिए 2.40 लाख करोड़ का बजट आवंटित केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने रेल बजट के लिए कई अहम घोषणाएं की। वित्त मंत्री ने रेलवे के लिए 2.40 लाख करोड़ आवंटित किए हैं। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि बजट में रेलवे के लिए 2.40 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत परिव्यय का प्रावधान किया गया है।

नई योजनाओं के लिए 75 हजार करोड़ का एलान

इसके अलावा वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने रेलवे में नई योजनाओं के लिए 75 हजार करोड़ की घोषणा की है। इससे पहले लोकसभा में बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि अमृत काल में यह पहला बजट है। बता दें कि पिछले साल 2022-23 में रेलवे के कायापलट के लिए 1.4 लाख करोड़ का बजट आवंटित किया गया था।

बतातें चलें कि इस बार के बजट में रेलवे सेक्टर के लिए अब तक की सबसे बड़ी राशि आवंटित की गई गई है। इससे पहले साल 2022-23 के लिए 1.4 लाख करोड़ आवंटित किए गए थे।

टैक्स स्लैब में हुआ बड़ा बदलाव

अब सात लाख तक सालाना आय पर नहीं लगेगा टैक्स

2022 सालाना आय	टैक्स	2023 सालाना आय	अब टैक्स
0-2.50 लाख	कुछ नहीं	0-3 लाख	कुछ नहीं
2.5-5 लाख	05%	3-6 लाख	05%
05-7.50 लाख	10%	6-9 लाख	10%
7.50-10 लाख	15%	9-12 लाख	15%
10-12.50 लाख	20%	12-15 लाख	20%
12.50- 15 लाख	25%	15 लाख+	30%
15 लाख +	30%		

सरलता, सहजता और भाईचारा छत्तीसगढ़ की पहचान- मुख्यमंत्री भूपेश बघेल

ग्राम कठिया में कुर्मी समाज और सतनामी समाज के भवन निर्माण के लिए 20-20 लाख रूपए की घोषणाआसोदा पंचायत का स्कूल अब बलदेव प्रसाद वर्मा के नाम से जाना जाएगाग्राम कठिया में कुर्मी समाज और सतनामी समाज के भवन निर्माण के लिए 20-20 लाख रूपए की घोषणाआसोदा पंचायत का स्कूल अब बलदेव प्रसाद वर्मा के नाम से जाना जाएगाग्राम कठिया में कुर्मी समाज और सतनामी समाज के भवन निर्माण के लिए 20-20 लाख रूपए की घोषणाआसोदा पंचायत का स्कूल अब बलदेव प्रसाद वर्मा के नाम से जाना जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ की मूल पहचान सरलता, सहजता और आपसी भाईचारा है। राज्य सरकार पुरखों के बताए हुए रास्ते पर चलकर गरीबों, किसानों, मजदूरों सहित सभी वर्गों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्राचीन समय में समाज में जो बुराई

और कुसंगतिया थी, उसमें सुधार करने का दौर है। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल आज रायपुर जिले के आरंग विकासखंड के ग्राम कठिया (खौली) में आयोजित छत्तीसगढ़ मनवा कुर्मी क्षत्रिय समाज चंदखुरी राज के 77वें वार्षिक अधिवेशन को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने समाज के पदाधिकारियों की मांग पर कुर्मी समाज के सामाजिक भवन के लिए 20 लाख रुपए और सतनामी समाज के सामाजिक भवन निर्माण के लिए 20 लाख रुपए देने की घोषणा की। उन्होंने आसोदा पंचायत के स्कूल को बलदेव प्रसाद वर्मा के नाम पर करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर समाज की प्रतिभाओं, समाजसेवियों, उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों एवं मेधावी छात्रों को सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि कुर्मी समाज ने एक प्रगतिशील समाज के रूप में आगे आकर सभी लोगों के विकास के लिए काम किया है। कोरोना काल में भी राज्य के सभी समाज के लोगों ने सेवा की मिसाल पेश की। किसी ने दवाई, किसी ने रहने की व्यवस्था, खाने की व्यवस्था, अस्पताल की व्यवस्था की। उन्होंने कहा कि देश की आजादी, शिक्षा के आंदोलन और छत्तीसगढ़ निर्माण में अपनी सहभागिता निभाई। डॉ. खूबचंद बघेल की दूरदर्शिता का यह परिणाम है कि आज छत्तीसगढ़ नए राज्य के रूप में विकसित हुआ और आज निरंतर विकास के पद पर आगे बढ़ रहा है। आज गरीब परिवार और गांव के बच्चे भी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ रहे हैं और समाज को गढ़ने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। आज संस्कृति के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ की देश में एक अलग पहचान बन चुकी है। देश का एकमात्र कौशल्या मंदिर चंदखुरी में है। अब हर साल यहां कौशल्या उत्सव मनाया जाएगा, जहां देश भर से कलाकार शामिल होंगे। राजिम को पहले कुंभ मेले के नाम से जाना जाता था, अब इसे राजिम माघी पुन्नी मेला के नाम से जाना जाता है। यह मेला 15 दिनों तक चलता है और यहां लोक कलाकार अपनी प्रस्तुति देते हैं। आज राजिम, शिवरीनारायण और डोंगरगढ़ सहित धार्मिक और पर्यटन स्थलों पर ठहरने की व्यवस्था की गई है। आप यहां जाइए दर्शन करने के बाद रुके और आसपास घूमकर आइए।

नगरीय प्रशासन मंत्री डॉ. शिव कुमार डहरिया ने भी चंदखुरी राज के मनवा कुर्मी क्षत्रिय समाज के वार्षिक अधिवेशन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में पूरे देश में प्रदेश का नाम रोशन हुआ है। पूरे देश में विकास के छत्तीसगढ़ मॉडल की चर्चा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार गरीब, किसान, मजदूरों को आर्थिक रूप से सशक्त करने का काम कर रही है। राजीव गांधी किसान न्याय योजना और भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना के माध्यम से प्रदेश के किसानों को उपज की सर्वाधिक कीमत मिल रही है। भूमिहीन मजदूरों को सालाना 7 हजार रूपए की सहायता दी जा रही है, राज्य सरकार ने बिजली बिल हाफ योजना लागू की और गरीब-अमीर सबके लिए राशन उपलब्ध कराने का काम किया गया है। शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहतर काम हो रहा है।

पं.क्र.26517

असंसदीय शब्द के प्रयोग को हतोत्साहित कर सदन की गरिमा के लिए मर्यादित व्यवहार का पालन जरूरी-बघेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने कहा है कि वर्तमान दौर में असंसदीय शब्द के प्रयोग को पूर्णतः हतोत्साहित करने की सख्त जरूरत है और सदन की गरिमा को बनाए रखने के लिए मर्यादित व्यवहार का पालन आवश्यक है। वे राजधानी के एक निजी होटल में आयोजित फेडरेशन ऑफ पीटीआई एम्प्लाइज यूनियन्स द्वारा आयोजित नेशनल मीडिया कॉन्फ्रेंस को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर पीटीआई के तत्वाधान में प्रकाशित पुस्तिका का विमोचन भी किया। कॉन्फ्रेंस में देश के विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के पत्रकार बड़ी संख्या में शामिल हुए।

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कॉन्फ्रेंस में आगे कहा कि लोकतंत्र में मीडिया की अहम भूमिका होती है। लोकतंत्र और मीडिया आधुनिक युग में न सिर्फ एक दूसरे के पूरक है बल्कि एक दूसरे के बिना उनका

कोई अस्तित्व ही संभव नहीं है। पूरे विश्व में लोकतंत्र स्थापित करने में मीडिया ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि इस कॉन्फ्रेंस में मुख्य रूप से मीडिया और लोकतंत्र में असंसदीय शब्दों के प्रयोग पर विमर्श हो रहा है, निश्चित रूप से यह भाषाई प्रदूषण पत्रकारिता और लोकतंत्र दोनों के लिए ही खतरनाक है। इस कॉन्फ्रेंस के थीम में असंसदीय भाषा के मीडिया और लोकतंत्र में बढ़ते प्रयोग पर चिंता व्यक्त की गई है। यह वास्तव में विचारणीय है। असंसदीय भाषा का लोकहित से कोई सरोकार नहीं होता, यह केवल और केवल घृणित तरीके से कुंठाओं को ही व्यक्त करती है। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने बताया कि असंसदीय भाषा का अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से भी कोई लेना-देना नहीं है। भारतीय संस्कृति में स्वतंत्रता का सम्मान किया गया है, तो मर्यादा की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया है।

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ विकास की दिशा में देश का एक तेजी से उभरता हुआ राज्य है। यहां हर वर्ग के लोगों के हितों को ध्यान में रखकर कार्य किया जा रहा है। इसी कड़ी में छत्तीसगढ़ के पत्रकार अपने पेशागत दायित्वों के साथ-साथ पारिवारिक दायित्वों को बेहतर तरीकों से निर्वाह कर सकें। इसके लिए कई तरह की योजनाओं का संचालन राज्य में किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में पत्रकारों की सुरक्षा के लिए कानून बनाने की दिशा में तेजी से पहल की जा रही है और बजट सत्र में पत्रकारों की सुरक्षा के लिए कानून बनाने प्रस्ताव लाया जाएगा। यहां वरिष्ठ मीडियाकर्मी सम्मान निधि योजना संचालित है। इस योजना में पत्रकारों को दी जानी वाली राशि को बढ़ाकर हमने दो गुना कर दिया है। राज्य में नए अधिमान्यता नियमों के अंतर्गत मीडिया संस्थानों में अधिमान्यता कोटा भी दोगुना कर दिया गया है। अब राज्य स्तर से लेकर विकासखंड स्तर तक अधिमान्यता दी जा रही है। पत्रकारों को गंभीर बीमारी के इलाज आदि के लिए आर्थिक सहायता प्रदाय की जाती है।

कार्यक्रम को पूर्व मंत्री तथा विधायक श्री बृजमोहन अग्रवाल, पीटीआई एम्प्लाइज यूनियन्स के महासचिव श्री बलराम सिंह दहिया तथा श्री अशोक वानखेड़े आदि ने भी सम्बोधित किया।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने छत्तीसगढ़ में जल्द बनेगी ग्रामीण उद्योग नीति- भूपेश बघेल

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि गौठानों में बन रहे रूरल इंडस्ट्रियल पार्क में आय मूलक गतिविधियों का अधिक से अधिक संचालन किया जाएगा। जिससे सभी को रोजगार मिलेगा। इसके लिए राज्य की नई औद्योगिक नीति की तर्ज पर जल्द ही ग्रामीण उद्योग नीति बनाई जाएगी। इससे गांव की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। मुख्यमंत्री आज रायपुर जिले के आरंग विधानसभा के ग्राम भानसोज में आयोजित भेंट-मुलाकात कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने भेंट-मुलाकात के दौरान ग्रामीणों से रू-ब-रू चर्चा करते हुए ऋण माफी, समर्थन मूल्य पर धान खरीदी, गौठानों में संचालित आयमूलक गतिविधियों, गोधन न्याय योजना, राजीव गांधी ग्रामीण भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना, राजीव गांधी किसान न्याय योजना, हाट बाजार क्लीनिक योजना और सार्वजनिक वितरण प्रणाली की मैदानी स्थिति की जानकारी ली।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गौठानों में विकसित किए जा रहे रूरल इंडस्ट्रियल पार्क में युवाओं को छोटे-छोटे ग्रामोद्योग प्रारंभ करने के लिए जमीन, बिजली, पानी, सड़क जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। जिससे युवा स्वावलंबन की राह पर आगे बढ़ सके। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा छत्तीसगढ़िया संस्कृति को आगे बढ़ाने और रोजगार के अधिक से अधिक अवसर पैदा करने के लिए निरंतर प्रयास किया जा रहा है, सभी को रोजगार मिले हमारा यही प्रयास है। सभी जगह किसान बहुत खुश हैं। हम धान से एथेनॉल बनाने की अनुमति मांग रहे हैं, जिसकी अनुमति केंद्र से नहीं मिल रही है। भेंट-मुलाकात में नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री डॉ शिव कुमार डहरिया भी उपस्थित थे।

भेंट-मुलाकात स्थल पहुंचने पर मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ महतारी के छायाचित्र पर माल्यार्पण, दीपप्रज्वलन कर एवं राज्य गीत 'अरपा पैरी के धार' से भेंट-मुलाकात कार्यक्रम की शुरूआत कर आमजनों से संवाद शुरू किया। राजीव गांधी किसान न्याय योजना के बारे में बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि 31 मार्च को इस योजना की चौथी किस्त किसानों को मिल जाएगी। उन्होंने कहा कि 107 लाख मीट्रिक टन धान की रिकार्ड खरीदी की गई है। सभी चीजें सही समय पर उपलब्ध हो गई, बारदाना से लेकर धान का उठाव, टोकन वितरण और किसानों को भुगतान आदि कार्यों का सुचारूपूर्वक संचालन हुआ। भेंट-मुलाकात के दौरान ग्राम संडी निवासी तिलक देवांगन ने मुख्यमंत्री से बात करते हुए बताया कि उनका 3 लाख 50 हजार रुपए का कर्ज माफ हो गया है। बच्चे को स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ा रहा हूं। ग्राम भानसोज के किसान सुखीराम साहू ने बताया कि उन्होंने 1100 कट्टा धान बेचा है। उन्होंने कहा कि मेरे धान से ही धान खरीदी की बोहनी की गई। सुखीराम ने बताया कि उनका 3 लाख 70 हजार रुपए का कर्ज माफ हुआ है। उन्होंने मुख्यमंत्री से गांव में नहर, नाली बनाने की मांग भी की है। मुख्यमंत्री ने जब वर्मी कंपोस्ट का उपयोग करने वाले किसानों से उत्पादन में आ रहे अंतर के बारे में पूछा तो श्री साहू ने बताया कि मैं जैविक खेती करता हूं, खेती के लिए लगातार वर्मी कंपोस्ट का उपयोग करता हूं, इससे फसलों की बीमारी भी कम हो रही है और फसल बढ़ भी रही है।

45 साल का अरबपति वापस जवान होने लगा

सदियों से चल रही मौत टालने की खोज; जुकरबर्ग से बेजोस तक ने अरबों लगाए

मौत एक शाश्वत सत्य है, लेकिन मरना कोई नहीं चाहता। अमेजन के जेफ बेजोस, गूगल के लैरी पेज और फेसबुक के मार्क जुकरबर्ग भी इससे अछूते नहीं। दुनिया के सबसे अमीरों में शुमार इन जैसे 14 बिलेनियर्स ने हमेशा जीवित रहने के लिए अलग-अलग एक्सपेरिमेंट्स पर अरबों रुपए लगाए हैं।

ऐसा ही एक एक्सपेरिमेंट कर रहे अमेरिकी एंटरप्रेन्योर ब्रायन जॉनसन को शुरुआती सक्सेस मिली है। 45 साल के ब्रायन ने दावा किया है कि उन्होंने महज 7 महीने में अपनी बायोलॉजिकल उम्र घटा ली है। इस रिवर्स एजिंग के बाद अब उनका दिल 37 साल, स्किन 28 साल और फेफड़े 18 साल के शख्स जैसे हो गए हैं।

मशहूर लेखक युवल नोवा हरारी ने अपनी किताब होमो डेयस में लिखा है कि वैज्ञानिकों के लिए मौत शरीर के सिस्टम में आने वाली एक तकनीकी खामी है। जिसकी वजह से शरीर का पूरा सिस्टम काम करना बंद कर देता है। वैज्ञानिक इस ?तकनीकी खामी को लैब में सही करने की कोशिश में जुटे हैं, जिससे मृत्यु को टाला जा सके।

रिसर्च 1

साल 2022 में एपिजेनेटिक्स रिसर्च प्रोग्राम के तहत की गई एक ऐसी ही स्टडी में दावा किया गया था कि वैज्ञानिकों की एक टीम ने एक ऐसा मेथड खोज निकाला है जिससे ह्यूमन स्किन सेल्स की उम्र को 30 साल तक रिवर्स किया जा सकता है। यानी अगर किसी व्यक्ति की बायोलॉजिकल उम्र 70 है तो उसकी स्किन 40 साल के वयस्क की तरह हो सकती है।

रिसर्च टीम में शामिल प्रोफेसर वुल्फ रीक (हाल ही में अल्टोस लैब्स जॉइन किया है) के मुताबिक जिस तरह स्किन सेल्स की फंक्शनिंग को कंट्रोल किया गया, उसी तरह अगर दूसरे ऑर्गन के सेल्स को कंट्रोल किया जाए तो मौत टाली जा सकती है। और इस पर काम जारी है।

रिसर्च 2

साल 2017 में हुए एक रिसर्च के बाद प्रोसिडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस जर्नल में पब्लिश हुई एक रिपोर्ट के मुताबिक बहुकोशिकीय यानी मल्टी सेलुलर जीवों में बढ़ती उम्र को रोकना असंभव है। यानी उनकी मौत होना निश्चित है।

स्टडी के मुताबिक सेल्स की फंक्शनिंग को जबरन कंट्रोल करने की कोशिश की गई तो उसकी मौत कैंसर जैसी बीमारियों से हो जाएगी।

इतिहास के सबसे पुराने लिट्रेचर में से एक द एपिक ऑफ गिलगमेश का एक छोटा सा अंश। ये एपिक मेसोपोटामिया काल में लिखा गया है, जिसमें अक्कादियन साम्राज्य के राजा गिलगमेश की कहानी है।

गिलगमेश अपने दोस्त एनकीडु की मौत के बाद बेहद दुखी और परेशान हो जाता है। इसके बाद वो अपनी मौत से बचने के रास्ते तलाशने लगता है। दो प्रयासों के बाद उसे पता चलता है कि वो अपनी मौत नहीं टाल सकता। अमर होने के मिशन में फेल होने के बाद एक कविता से उसने जीवन का अर्थ बताया-

मनुष्य जन्म लेते हैं, जीते हैं, फिर मर जाते हैं,
ये वो नियति है जो भगवान ने इंसानों के लिए तय की है।
इसलिए अंत आने तक, अपनी लाइफ को इंजॉय करें,
इसे निराशा में नहीं, खुशी से जिएं।
...अपने बच्चे से प्यार करिए जो आपके हाथों को पकड़ता है
अपनी पत्नी को गले लगाइए, उसे खुश रखें।
यही जिंदगी जीने का सबसे अच्छा तरीका है।

एक्सपेरिमेंट में बूढ़ा चूहा जवान हो गया

हार्वर्ड मेडिकल स्कूल की एक रिसर्च लैब में एक बूढ़े अंधे चूहे ने फिर से अपनी आंखों की रोशनी पा ली। उसका ब्रेन एक वयस्क चूहे जितना स्मार्ट हो गया। ये एक्सपेरिमेंट 12 जनवरी 2023 को एक रिसर्च जर्नल में पब्लिश हुआ।

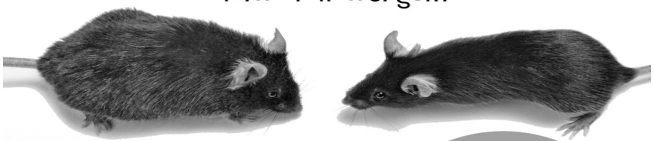

एक्सपेरिमेंट करने वाले **डॉ. सिंक्लेयर** के मुताबिक...

हमने बुढ़ापे से जवान होने और समय से पहले बूढ़ा करने वाले राज को खोज निकाला है।

हमने एक राज खोजा है, जिससे न सिर्फ रिवर्स एजिंग की जा सकती है, बल्कि समय से पहले उम्र बढ़ाई भी जा सकती है।

हमारे शरीर में जवानी के समय की एक बैकअप कॉपी मौजूद रहती है जिसे ट्रिगर करके हम वापस जवान हो सकते हैं।

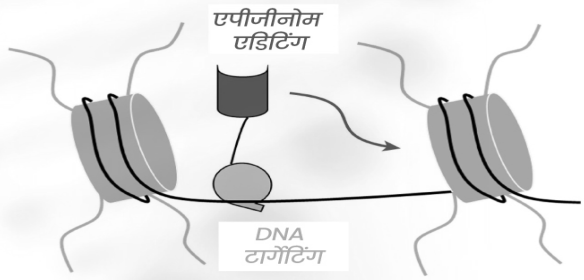

एपीजीनोम वो स्विच है जिसके जरिए जीव के जवानी की स्विच को ऑन या ऑफ किया जा सकता है।

हालांकि रिवर्स एजिंग का ये एक्सपेरिमेंट कुछ चूहों पर ही किया गया है। इंसानों पर ये कितना कारगर साबित होगा इस पर कुछ कहना जल्दबाजी होगी।

इंसान पर रिवर्स एजिंग का एक्सपेरिमेंट

45 साल के अमेरिकी एंटरप्रेन्योर **ब्रायन जॉनसन** चाहते हैं कि उनका दिल, दिमाग, फेफड़े, लिवर, किडनी, दांत, स्किन, बाल और अन्य ऑर्गन 18 साल जैसे हो जाए। इसके लिए उन्होंने 7 महीने पहले एक एक्सपेरिमेंट शुरू किया।

वो वीगन डाइट पर हैं और दिनभर में सिर्फ 1977 कैलोरी खाते हैं।

सुबह तय समय पर उठते हैं, सप्लीमेंट्स खाते हैं और जमकर एक्सरसाइज करते हैं।

रात तय समय पर सोते हैं और उससे दो घंटे पहले ब्लू लाइट हटाने वाला चश्मा पहनते हैं।

हर महीने उन्हें दर्जनों मेडिकल प्रोसीजर से गुजरना पड़ता है। इनमें से कुछ काफी दर्दनाक होते हैं।

Blueprint

ब्रायन जानसन के इस प्रोजेक्ट का नाम है ब्लूप्रिंट और 30 डॉक्टर्स की टीम इसकी देखरेख करती है।

ब्रायन जॉनसन पर एक्सपेरिमेंट को लीड कर रहे डॉ. ओलिवर जोलमैन का दावा है कि वो रिवर्स एजिंग में कामयाब हो गए हैं।

सिर्फ 7 महीने में ही अब उनका दिल 37 साल, स्किन 28 साल और फेफड़े 18 साल के शख्स जैसे हो गए हैं।

इस प्रोजेक्ट पर हर साल करीब **16 करोड़ रुपए** खर्च का अनुमान है।

इस एक्सपेरिमेंट से उनके सेल्स एक्टिविटी में कैसे बदलाव हो रहा इस पर अभी कोई विस्तृत रिपोर्ट नहीं आई है।

मौत टालने का फॉर्मूला खोजते बिलेनियर्स

जेफ बेजोस
अमेजन के फाउंडर

ALTOS™

अल्टोस लैब्स में निवेश किया है, जो सेल की हेल्थ और सेलुलर प्रोग्रामिंग के जरिए रोग, चोट और जीवन भर होने वाली अक्षमताओं को दूर करने के लिए काम कर रही है।

2022 में लॉन्च हुई ये कंपनी फिलहाल यूएस और यूके में काम कर रही है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार भविष्य में कैम्ब्रिज यूके और जापान में भी इस कंपनी को लॉन्च किया जाएगा।

अल्टोस लैब्स यूनिवर्सिटी के साइंटिस्ट्स के एक बड़े कैडर को हैंडसम सैलरी का लालच देकर भर्ती कर रहा है। अब तक 3 मिलियन डॉलर से ज्यादा की फंडिंग मिल चुकी है।

पीटर थिएल
टेक अरबपति

'जब डॉक्टर ने लता मंगेशकर को बताया कि उन्हें धीमा जहर दिया जा रहा है'

नयी दिल्ली. अपनी मीठी आवाज से लोगों पर जादू करने वालीं लता मंगेशकर के जीवन में एक ऐसा समय भी आया था, जब 1962 में उनके स्वास्थ्य को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा हो गई थीं और उन्हें ''जहर'' देने संबंधी चौंकाने वाली खबर सामने आई थी.

नसरीन मुन्नी कबीर की किताब ''लता मंगेशकर इन हर ओन वॉयस'' पुस्तक में जहर देने की घटना को याद करते हुए, सुर साम्राज्ञी ने कहा कि वह तीन महीने तक बिस्तर पर रही थीं. मंगेशकर ने किताब में कहा, ''1962 में, मैं लगभग तीन महीने तक बहुत बीमार रही. एक दिन, मुझे पेट में बहुत दर्द हो रहा था. और फिर मुझे उल्टी हुई. डॉक्टर ने मेरे पेट का एक्स-रे किया और कहा कि मुझे धीमा जहर दिया जा रहा है.'' मंगेशकर ने याद किया था कि कैसे वह इतनी कमजोर महसूस करती थीं कि उन्हें लगा था कि वह फिर कभी गा नहीं पाएगी. उन्हें जहर दिए जाने की चौंकाने वाली खबर सुनकर उनकी बहन उषा सीधे रसोई में गई और सभी से कहा कि घरेलू सहायक अब खाना नहीं बनायेंगे, बल्कि वह बनायेंगी.

मंगेशकर ने दावा किया था कि इसके तुरंत बाद घरेलू सहायक बिना किसी को बताए और वेतन लिये बगैर चुपके से चला गया. उन्होंने कहा था, ''तो हमें लगा कि किसी ने उसे वहां भेजा था. हमें नहीं पता था कि वह कौन था. मैं तीन महीने तक बिस्तर पर पड़ी रही और बहुत कमजोर हो गई थी.''

सिर्फ एक दिन ही स्कूल जा पायी थीं लता मंगेशकर, घरेलू सहायिका से सीखा था मराठी वर्णमाला

स्कूल के पहले दिन लता मंगेशकर अपनी करीब 10 महीने की छोटी बहन आशा भोसले को लेकर जब कक्षा में पहुंचीं तो उन्हें शिक्षिका से खूब डांट पड़ी और सुर सम्राज्ञी ने गुस्से में स्कूल से इस कदर मुंह मोड़ा कि फिर कभी वहां कदम नहीं रखा. स्वर कोकिला ने मराठी वर्णमाला अपने घर में घरेलू सहायिका से सीखा, जिन्होंने उन्हें लिखना-पढ़ना सिखाया.

'लता मंगेशकरज् उनकी जुबानी' शीर्षक वाली अपनी किताब में दोनों की बातचीत का विस्तृत ब्योरा देने वाली लेखिका नसरीन मुन्नी कबीर लिखती हैं, ''मैं करीब तीन-चार साल की थी, जब मैंने हमारे घरेलू सहायिका विठ्ठल, जो उस वक्त किशोरी थी, से मुझे मराठी वर्णमाला सिखाने और पढ़ना-लिखना सिखाने को कहा. मैंने घर पर ही मराठी पढ़ना सीखा.'' मंगेशकर हालांकि, उससे पहले कुछ दिनों तक नर्सरी स्कूल गई थीं. किताब में लता कहती हैं, ''मास्टर जी श्यामपट्ट पर 'श्री गणेशजी' लिखा करते थे और मैं उसका सटीक नकल किया करती थी. मुझे 10 में से 10 नंबर मिले थे.''

उस वक्त लता की रिश्तेदार वसंती महाराष्ट्र के सांगली में अपने घर के ठीक सामने स्थित मराठी माध्यम के मुरलीधर स्कूल की तीसरी कक्षा में पढ़ती थीं. कभी-कभी लता उन्हीं के साथ स्कूल चली जाती थीं और वसंती जब संगीत का अभ्यास करती थीं, तो मंगेशकर भी पूरे ध्यान से शिक्षक को गाते हुए सुनती थीं.

किताब के अनुसार, ''एक दिन, शिक्षिका ने मेरी तरफ ईशारा कर के मेरी रिश्तेदार से पूछाज् यह कौन है? मैंने एकदम खुश होकर कहाज् मैं मास्टर दीनानाथ की बेटी हूं.'' लता ने कहा, ''उन्होंने कहा, वह बहुत अच्छे गायक हैं. क्या तुम गा सकती हो? मैंने उन्हें बताया कि मैं कई राग गा सकती हूं और मैंने उनके नाम बता दिएज् वह तत्काल मुझे स्टाफ रूम में ले गईं, जहां और शिक्षक बैठे थे और मुझसे गाने को कहा. मैंने हिंडोल राग पर आधारित शास्त्रीय गीत गाया. मैं उस वक्त करीब चार-पांच साल की थी.'' उसी दिन, मंगेशकर को इस स्कूल में जाना था और उस वक्त आशा भोसले करीब 10 महीने की थीं.

किताब के अनुसार, मंगेशकर याद करती हैं, ''मैंने उसे (आशा को) गोद में लिया और स्कूल पहुंच गयी. जब मैं कक्षा में पहुंची तो वहां भी आशा को गोद में लेकर बैठ गई. मेरी शिक्षिका ने बड़े कड़े शब्दों में कहा 'बच्चों को लाने की अनुमति नहीं है.' मुझे बहुत गुस्सा आया और मैं वहां से उठ गयी. मैं आशा को लेकर घर आ गई और कभी नहीं (स्कूल) लौटी.''

जब भारतीय टीम की जीत के लिये लताजी ने रखा था व्रत-क्रिकेट को लेकर लता मंगेशकर की दीवानगी जगजाहिर है और विश्वकप 2011 में पाकिस्तान के खिलाफ सेमीफाइनल में भारतीय टीम की जीत के लिये उन्होने निर्जल व्रत रखा था . उन्होंने एक समय भाषा को दिये इंटरव्यू में कहा था ,''मैने पूरा मैच देखा और मैं काफी तनाव में थी .''

उन्होंने कहा था ,'' जब भारतीय टीम खेलती है तो मेरे घर में सभी का कुछ न कुछ टोटका होता है . मैंने , मीना और उषा ने सेमीफाइनल के दौरान कुछ खाया पिया नहीं . मैं लगातार भारत की जीत के लिये प्रार्थना कर रही थी और भारत की जीत के बाद ही हमने अन्न जल ग्रहण किया .''

विश्व कप 1983 फाइनल को याद करते हुए उन्होंने कहा था ,''मैं उस समय लंदन में ही थी और मैने कपिल देव और उनकी टीम को इंग्लैंड के खिलाफ सेमीफाइनल से पहले डिनर के लिये बुलाया था . मैंने उन्हें शुभकामनायें

दी .'' उन्होंने कहा ,'' खिताब जीतने के बाद कपिल देव ने मुझे डिनर के लिये बुलाया था . मैने जाकर टीम को बधाई दी .'' सचिन तेंदुलकर को वह अपना बेटा मानती थी और वह भी उन्हें मां सरस्वती कहते थे .यह संयोग की है कि सरस्वती पूजा के अगले दिन ही भारत की सरस्वती का देवलोकगमन हुआ .

जब 1983 की जीत के बाद बीसीसीआई को संकट से निकाला था लता जी ने

कपिल देव की कप्तानी वाली भारतीय टीम ने जब लार्ड्स की बालकनी पर विश्व कप थामा था तब बीसीसीआई के तत्कालीन अध्यक्ष और इंदिरा गांधी सरकार के धाकड़ मंत्री दिवंगत एनकेपी साल्वे के सामने यक्षप्रश्न था कि इस जीत का जश्न मनाने के लिये धन कहां से आयेगा.

उस समय भारतीय क्रिकेट दुनिया की महाशक्ति नहीं बना था और आज के क्रिकेटरों की तरह धनवर्षा भी उस समय क्रिकेटरों पर नहीं होती थी. आज बीसीसीआई के पास पांच अरब डॉलर का टीवी प्रसारण करार है लेकिन तब खिलाड़ियों को बमुश्किल 20 पाउंड दैनिक भत्ता मिलता था. साल्वे ने समाधान के लिये राजसिंह डुंगरपूर से संपर्क किया . उन्होंने अपनी करीबी दोस्त और क्रिकेट की दीवानी लता मंगेशकर से जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम पर एक कन्सर्ट करने का अनुरोध किया . खचाखच भरे स्टेडियम में लताजी ने दो घंटे का कार्यक्रम किया. बीसीसीआई ने उस कन्सर्ट से काफी पैसा एकत्र किया और सभी खिलाड़ियों को एक एक लाख रूपये दिया गया .

झुमरी तिलैया और लता मंगेशकरः एक अटूट रिश्ता

झुमरी तिलैया संगीत प्रेमियों के लिए एक जाना पहचाना नाम है. झारखंड में प्रकृति की गोद में बसे इस कस्बे ने नयनाभिराम झीलों के दृश्य से प्रकृति प्रेमियों के बीच एक अलग पहचान बनाई है. इस छोटे से कस्बाई शहर को 1950 के दशक की शुरुआत में रेडियो सीलोन और आकाशवाणी ने भी खासी प्रसिद्धि दिलाई. आकाशवाणी के विविध भारती पर उस समय फरमाइशी गानों के कार्यक्रम में झुमरी तिलैया से सबसे अधिक महान गायिका लता मंगेशकर द्वारा गाए गानों को बजाने की मांग की जाती थी.

सावरकर के रात्रिभोजों की सबसे छोटी सदस्य होने से लेकर उनके गीतों को स्वर तक दिया था लता ने

विवादास्पद हिंदू राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर की अंतर-जातीय रात्रिभोज मंडली की सबसे कम उम्र की सदस्य रहने से लेकर उनके गीतों को स्वर देने तक, सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर इस स्वतंत्रता सेनानी के साथ करीबी रूप से जुड़ी हुई थीं. 'सावरकरः द ट्रू स्टोरी ऑफ फादर ऑफ हिंदुत्व' के लेखक एवं पत्रकार वैभव पुरंदरे ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि अंडमान जेल से रिहा होने के बाद सावरकर रत्नागिरि में बस गये थे. इसके बाद उन्होंने निचली जातियों के परिवारों के बच्चों को स्थानीय स्कूलों में शिक्षा दिलाने का एक अभियान शुरू किया था.

पुस्तक के अनुसार, महज पांच साल की उम्र में लता अपने पिता, गायक एवं मंच कलाकार दीनानाथ मंगेशकर के साथ इन अंतर-जातीय रात्रिभोजों में से एक में गई थीं. लेखक ने अपनी पुस्तक में लिखा है, ''इन रात्रिभोजों में शामिल होने वालों में एक उत्साही सदस्य गायिका और मंच कलाकार दीनानाथ मंगेशकर थे.'' पुरंदरे ने लिखा है कि सावरकर, खासतौर पर दीनानाथ की पत्नी शेवंती के बनाये शाकाहारी पुलाव का इंतजार किया करते थे, जो वह उनके लिए ले जाया जाता था. शेवंती को 'माई' के नाम से भी जाना जाता था.

उन्होंने लिखा है, ''ऐसी एक यात्रा पर दीनानाथ ने अपनी पांच साल की बच्ची लता को सावरकर के अंतरजातीय रात्रिभोजों में अपने साथ ले जाने का फैसला किया.'' पुरंदरे ने लिखा है कि माई बच्ची को उनके साथ भेजने के लिए अनिच्छुक थी.

वहीदा की चाकलेट और लता की साड़ियां ज

सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर के साथ अपने दोस्ताना संबंधों को याद करते हुए अभिनेत्री वहीदा रहमान ने कहा कि वह महान गायिका को अक्सर चॉकलेट, कबाब और बिरयानी भेजा करती थीं, जिसके बदले में अपने आशीर्वाद के रूप में लता उन्हें सुंदर साड़ियां भेजती थीं. वहीदा (84) के लिए लता ने 'आज फिर जीने की तमन्ना है' और 'पिया तो से नैना लागे रे' जैसे सदाबहार गीत गाये थे.

अभिनेत्री ने सुर साम्राज्ञी के निधन पर रविवार को शोक प्रकट किया और कहा, ''मैंने अपनी एक सहेली खो दी, सबसे सुंदर इंसान. '' उन्होंने लता के साथ अपने दशकों के संबंध को याद करते हुए यह बात कही. वहीदा ने कहा, ''यह हर किसी के लिए विभिन्न तरह से सचमुच में एक नुकसान है. मेरे लिए, मैं नहीं जानती कि क्या कहना है, हम एक दूसरे से रोज बातचीत नहीं किया करते थे लेकिन हम दोनों ने एक दूसरे के साथ का बहुत अच्छा समय बिताया, हम एक दूसरे को बखूबी जानते थे. लोग अक्सर सोचते हैं कि वह एक शर्मीली महिला थी लेकिन मैंने उन्हें चुटकुले सुनाते देखा. हमने जो वक्त साथ गुजारा है, वह मेरे साथ सदा रहेगा. ''

लंदन के प्रतिष्ठित रॉयल अल्बर्ट हॉल में प्रस्तुति देने वाली पहली भारतीय कलाकार

भारत की स्वर कोकिला के रूप में जानी जाने वाली गायिका लता मंगेशकर को लंदन के प्रतिष्ठित रॉयल अल्बर्ट हॉल में लाइव प्रस्तुति देने वाली पहली भारतीय कलाकार होने का गौरव प्राप्त है. उन्होंने 1974 में अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी शुरुआत के लिए ब्रिटेन के रॉयल अल्बर्ट हॉल को चुना था, जहां उन्होंने दर्शकों से खचाखच भरे हॉल में अपने कुछ सबसे पसंदीदा गीतों को प्रस्तुत किया था.

उन्होंने हिंदी में अपने संक्षिप्त भाषण में कहा था, यह भारत से बाहर मेरा पहला संगीत कार्यक्रम है. मैं काफी नर्वस थी, लेकिन गर्मजोशी भरे स्वागत के लिए मैं आभारी हूं.

जब दिलीप कुमार की टिप्पणी के बाद लता मंगेशकर ने एक मौलाना से उर्दू पढ़ना शुरू किया

स्वर कोकिला लता मंगेशकर को लेकर अक्सर लोगों के मन में एक सवाल उठता है कि एक मराठी भाषी गायिका ने उर्दू से परिचित नहीं होने के बावजूद इस भाषा में अपने उच्चारण को कैसे बेहतर किया? इसका उत्तर वर्ष 1947 में मिलता है, जब लता मंगेशकर पहली बार दिलीप कुमार से मिलीं और कुमार ने मंगेशकर के उर्दू उच्चारण को लेकर संदेह जताया. इसके बाद दिलीप की एक टिप्पणी ने उन्हें उर्दू सीखने के लिए एक मौलाना से पढ़ने को प्रेरित किया.

मंगेशकर ने कुमार की आत्मकथा द सब्सटेंस एंड द शैडो में उर्दू के साथ अपने प्रयोगों को याद किया और कहा कि कुमार ने उन्हें अपनी पहली मुलाकात में ही अनजाने में और बिना सोचे समझे एक उपहार दिया था.

प्रसिद्ध संगीतकार अनिल बिस्वास ने एक लोकल ट्रेन में मंगेशकर को दिग्गज अभिनेता से मिलवाया था. वर्ष 1947 में हुई मुलाकात को याद करते हुए मंगेशकर ने लिखा कि बिस्वास ने उन्हें कुमार से यह कहते हुए मिलवाया, यह लता है, बहुत अच्छी गाती है. इस पर कुमार ने जवाब दिया, अच्छा, कहां की है? और बिस्वास ने उनका पूरा नाम लता मंगेश

ाकर बताया.

कुमार का वास्तविक नाम यूसुफ खान था और वह दिलीप कुमार के नाम से मशहूर थे.

मंगेशकर ने पुस्तक में कहा, यूसुफ भाई की वो टिप्पणी, जब उन्हें पता चला कि मैं एक मराठी हूं, वह कुछ ऐसी है जिसे मैं संजोती हूं और इसने मुझे हिंदी और उर्दू भाषा में पूर्णता की तलाश को प्रेरित किया क्योंकि मैं इसमें कमजोर थी. उन्होंने बेहद सच कहा कि जो गायक उर्दू भाषा से परिचित नहीं थे, वे उर्दू के शब्दों के उच्चारण में हमेशा फंस जाते हैं और इससे श्रोताओं का मजा खराब हो जाता है.

पेड्डर रोड फ्लाईओवर का विरोध करने के लिए लता मंगेशकर को आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था

स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर दो दशक पहले तब विवादों में आई थीं जब उन्होंने पेड्डर रोड पर प्रस्तावित फ्लाईओवर को लेकर आपत्ति जताई थी, जो दक्षिण मुंबई में प्रभा कुंज स्थित उनके आवास से गुजरने वाली थी. गिरगांव चौपाटी से लेकर हाजी अली जंक्शन तक पेड्डार रोड पर 4.1 किलोमीटर लंबे फ्लाईओवर को बनाने की योजना वर्ष 2000 में बनी थी जिसका विरोध लता मंगेशकर और उनकी बहन आशा भोसले सहित स्थानीय निवासियों ने किया था. पेड्डर रोड दक्षिण मुंबई में तारदेव और मालाबार हिल्स को जोड़ता है और यहां कई धनाढ्य लोग रहते हैं.

लता और आशा ने अन्य निवासियों के साथ मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख से मुलाकात कर फ्लाईओवर के निर्माण का विरोध किया था. दोनों बहनों ने विधान भवन के प्रेस कक्ष में मीडिया से बात की थी और चेतावनी दी थी कि अगर इस परियोजना का निर्माण हुआ तो वे मुंबई छोड़ देंगी.

लता ने कहा था कि वह पुणे या कोल्हापुर चली जाएंगी. ''मुंबई छोड़ने'' के बयान के लिए दोनों बहनों की आलोचना हुई थी और आलोचकों ने कहा था कि महानगर के अन्य हिस्सों में जब फ्लाईओवर बनते हैं तो आम निवासियों से नहीं पूछा जाता है. कई वर्षों बाद यह परियोजना रोक दी गई. इसके पीछे का कारण स्थानीय निवासियों का दबाव और दक्षिण मुंबई में एक तटीय रोड का निर्माण भी बताया गया.

मोदी की वेबसाइट पर लता मंगेशकर के साथ उनके 'खास रिश्ते' को याद किया गया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वेबसाइट पर रविवार को स्वर कोकिला लता मंगेशकर और उनके खास रिश्ते को याद किया गया. इसमें कहा गया कि महान गायिका ने वर्ष 2013 में कहा था कि वह मोदी को भारत के प्रधानमंत्री के रूप में देखने की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं.

वेबसाइट पर एक खास रिश्ता शीर्षक के साथ साझा किए गए लेख में कहा गया, लता दीदी का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए अपार स्नेह था. इसमें कहा गया, लता दीदी स्वर्गलोक के लिए प्रस्थान कर चुकी हैं. यह भारतीय फिल्म उद्योग के शानदार और मधुर युग का अंत है. उनकी भावपूर्ण आवाज पूरे देश में गूंजी और देश में लाखों दिल जीते. अपने प्रशंसकों द्वारा 'स्वर कोकिला' के रूप में बुलाए जाने पर, लता दीदी ने उनके साथ एक विशेष अमूर्त रिश्ता साझा किया. लता दीदी को अपने प्रशंसकों से ही नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री मोदी से भी बेहद लगाव था.

मामूली भूमिकाओं से लेकर सुर साम्राज्ञी तक ञ लता मंगेशकर ने फिल्मों में इस तरह किया प्रवेश

पिता का निधन हो चुका था और परिवार पालने का कोई जरिया ना था ज ऐसे में परिवार का बोझ उठाने के लिए लता मंगेशकर ने फिल्म उद्योग में छोटी छोटी भूमिकाओं से अपने कैरियर की शुरूआत की . उस समय किसे पता था कि एक वक्त आने वाला है, जब लता दशकों तक संगीत जगत पर राज करेंगी.

मंगेशकर को उनके जन्म के समय 'हेमा' नाम दिया गया था, लेकिन उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर के नाटक 'भाव बंधन' में लतिका नाम की एक महिला चरित्र से प्रेरित होकर उन्हें लता नाम दिया गया. कम ही लोग जानते हैं कि पांच साल की उम्र में, गायिका ने मराठी भाषा में अपने पिता के संगीत नाटकों में एक अदाकारा के रूप में काम करना शुरू कर दिया था.

मंगेशकर पर लिखी किताब में लेखक यतींद्र मिश्रा ने नाट्यमंच पर गायिका की शुरुआत का जिक्र किया है. उन्होंने 'लताः सुर गाथा' में लिखा है, ''पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर की नाटक कंपनी 'बलवंत संगीत मंडली' ने अर्जुन और सुभद्रा की कहानी पर आधारित नाटक 'सुभद्रा' का मंचन किया. पंडित दीनानाथ ने अर्जुन की भूमिका निभाई जबकि नौ वर्षीय लता ने नारद की भूमिका निभाई.'' नाटक शुरू होने से पहले, लता ने अपने पिता से कहा कि वह हमेशा की तरह दर्शकों से वाहवाही और 'वंस मोर' की सराहना प्राप्त करेंगी. लता ने यह कर दिखाया. बाद में उन्होंने अपने पिता की फिल्म 'गुरुकुल' में कृष्ण की भूमिका निभाई.

वर्ष 1942 में, जब लता मंगेशकर के पिता की हृदय रोग से मृत्यु हो गई, तब फिल्म अभिनेता-निर्देशक और मंगेशकर परिवार के करीबी दोस्त, मास्टर विनायक दामोदर कर्नाटकी ने उन्हें एक अभिनेत्री और गायिका के रूप में अपना करियर शुरू करने में मदद की. मंगेशकर ने 1942 में वसंत जोगलेकर की मराठी फिल्म 'किती हसाल' के लिए सदाशिवराव नेवरेकर द्वारा रचित एक मराठी गीत 'नाचू या गाड़े, खेलो सारी मणि हौस भारी' गाया था, लेकिन दुर्भाग्य से गीत को हटा दिया गया था. मास्टर विनायक ने मंगेशकर को एक मराठी फिल्म 'पहिली मंगला गौर'' में एक छोटी भूमिका की पेशकश की थी और उनसे 'नताली चैत्रची नवलई' गीत भी गवाया था. 1945 में जब मंगेशकर मुंबई चली आईं , तो उन्होंने संगीत की शिक्षा लेनी शुरू कर दी. मंगेशकर को 1945 में मास्टर विनायक की हिंदी भाषा की फिल्म ''बड़ी मां'' में अपनी छोटी बहन आशा भोसले के साथ एक छोटी भूमिका निभाने का अवसर मिला. फिल्म में, उन्होंने एक भजन 'माता तेरे चरणों में' भी गाया था.

अभिनय वक्त की जरूरत थी, उन्होंने मराठी फिल्मों में नायिका की बहन, नायक की बहन जैसी छोटी भूमिकाएं निभाईं, लेकिन उन्हें कभी भी मेकअप करना और कैमरे के सामने काम करना पसंद नहीं था. मंगेशकर ने 2008 में एनडीटीवी को बताया था, ''मैंने एक अभिनेत्री के रूप में शुरुआत की थी. लेकिन मुझे एक्टिंग करना कभी पसंद नहीं था. मैं मास्टर विनायक के साथ काम करती थी. मैंने फिल्मों में काम किया लेकिन मुझे कभी मजा नहीं आया. मुझे मेकअप करने और कैमरे के सामने हंसने और रोने से नफरत थी. इसके बावजूद मैं गायन से प्यार करती थी. मैं बचपन से ही इसकी ओर आर्किषत थी.''

फिर 1947 में मास्टर विनायक का निधन हो गया और उनकी ड्रामा कंपनी प्रफुल्ल पिक्चर्स बंद हो गई. मंगेशकर ने कहा था, ''मैंने उसके बाद पार्श्व गायन शुरू किया.'' संगीत निर्देशक गुलाम हैदर ने मंगेशकर को फिल्म मजबूर (1948) में पहला बड़ा ब्रेक गीतकार नाजिम पानीपति के गीत ''दिल मेरा तोड़ा, मुझे कहीं का ना छोड़ा'' गाने के साथ दिया जो उनकी पहली बड़ी सफलता वाली फिल्म थी. इसके बाद संगीत निर्देशक खेमचंद प्रकाश द्वारा रचित और अभिनेत्री मधुबाला पर फिल्माया गया फिल्म 'महल' (1949) का एक गीत ''आयेगा आने वाला'' गाया. इस गाने के बाद मंगेशकर को कभी पीछे पलटकर नहीं देखना पड़ा.

छत्तीसगढ़ की सबसे ऊंची चोटी से अब पर्यटकों को मिलेगा प्रकृति का प्यार

* छत्तीसगढ़ की सबसे ऊंची चोटी से
* बलरामपुर के गौरव गौर-लाटा को पर्यटन स्थल बनाने की मुख्यमंत्री ने की है घोषणा
* स्थानीय पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा, रोजगार के साधन होंगे उपलब्ध

रायपुर, छत्तीसगढ़ के उत्तरी छोर पर स्थित सबसे ऊंची चोटी गौरलाटा पर्यटन के लिहाज से अविश्वसनीय स्थान है। स्थानीय स्तर पर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए जिला प्रशासन द्वारा यहां लगातार प्रयास किया जा रहा था। बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के कलेक्टर श्री विजय दयाराम गौर-लाटा के स्थानीय निवासियों को रोजगार के नए संसाधनों के अवसर उपलब्ध कराने के लिए नई कार्ययोजना भी तैयार कर रहे थे। अब इन सभी बातों को तेजी से गति मिलेगी क्यूंकि मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने गौर-लाटा के महत्व को देखते हुए इसे पर्यटन स्थल के रूप मे विकसित करने की घोषणा की है।

1225 मीटर ऊंची गौर-लाटा छत्तीसगढ़ की सबसे ऊंची चोटी है और भौगोलिक संरचना के अनुसार पाट प्रदेश से संबंधित है। इस चोटी से छत्तीसगढ़ और झारखंड की सीमा पर स्थित बड़े वन क्षेत्र की अद्भुत खूबसूरती नजर आती है। इस पहाड़ी पर कई गुफाएं और प्राकृतिक जलस्रोत भी हैं। फिलहाल ये स्थान स्थानीय लोगों के पर्यटन के लिए पहली पसंद है, लेकिन अब पर्यटन स्थल क्षेत्र घोषित होने से यह क्षेत्र बेहतर रूप में ऊभर कर सामने आएगा।

जिले के सामरी तहसील क्षेत्र के अंतर्गत छत्तीसगढ़ की सबसे ऊंची चोटी गौर-लाटा की पहाड़ी फिलहाल स्थानीय पर्वतारोहियों की पसंदीदा जगह है और ट्रेकिंग के लिए भी प्रसिद्ध है । यहां अक्सर प्रशासनिक टीम और स्थानीय ग्रुप्स क्षेत्र को विकसित करने का संदेश लेकर गौर-लाटा की चढ़ाई करते हैं। हालांकि कठिन रास्तों के कारण पर्यटकों की अभी भी यहां से दूरी बनी हुई है। इस कठिनाई को आसान बनाने के लिए बलरामपुर जिला प्रशासन और स्थानीय जनप्रतिनिधियों द्वारा पहले से ही प्रयास किया जाता रहा है और अब मुख्यमंत्री की घोषणा के बाद गौर-लाटा को बलरामपुर के गौरव के रूप में विकसित हो सकेगा जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार के नए अवसर मिलने के साथ ही पर्यटको को भी प्रकृति का प्यार मिल सकेगा।

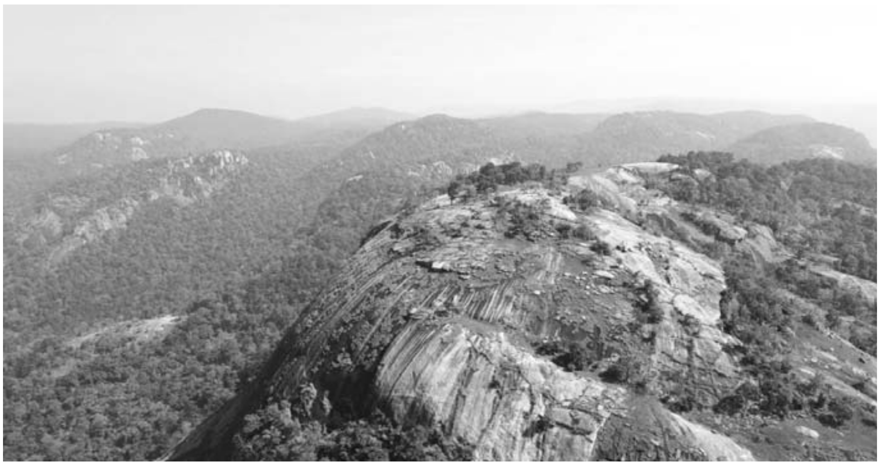

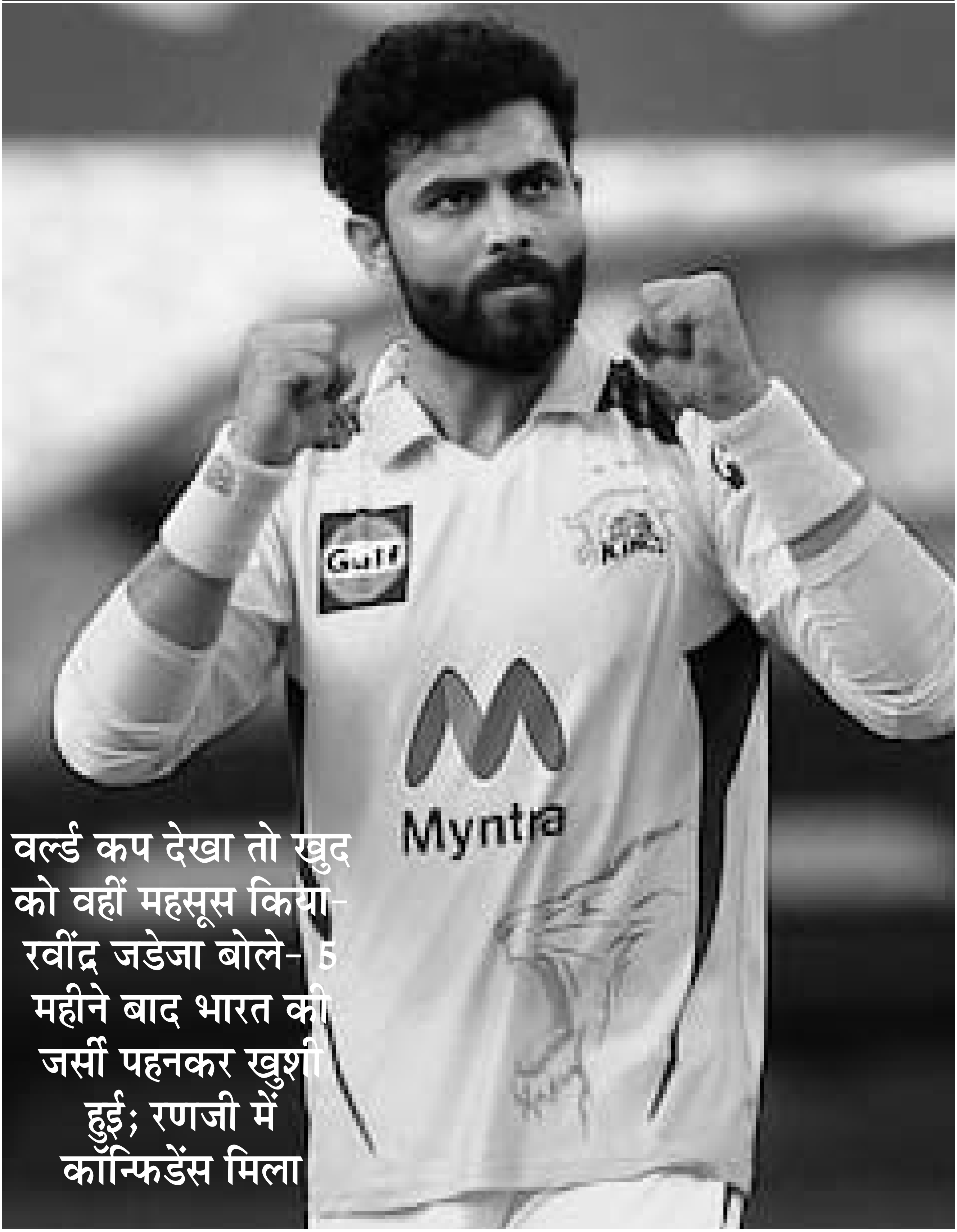

वर्ल्ड कप देखा तो खुद को वहीं महसूस किया- रवींद्र जडेजा बोले- 5 महीने बाद भारत की जर्सी पहनकर खुशी हुई; रणजी में कॉन्फिडेंस मिला

भारतीय क्रिकेट टीम के ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा भारतीय टीम के साथ जुड़ चुके हैं। वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 9 फरवरी से शुरू हो रही टेस्ट सीरीज में टीम इंडिया का हिस्सा होंगे। टेस्ट मैच से पहले BCCI ने रवींद्र जडेजा के इंटरव्यू का वीडियो शेयर किया। इसमें उन्होंने अपने सर्जरी के बाद हुए रिहैब एक्सपीरिएंस को शेयर किया।

उन्होंने कहा, 5 महीने बाद वापसी करके बहुत खुश हूं। सर्जरी के बाद रिहैब में फिजियो ने छुट्टी के दिन भी मुझ पर मेहनत की।

वर्ल्ड कप से पहले सर्जरी का फैसला मुश्किल था

रवींद्र जडेजा ने आखिरी बार अगस्त 2022 में एशिया कप के दौरान भारत के लिए क्रिकेट मैच खेला था। एशिया कप में ही उन्हें घुटने में चोट लगी थी। इसके बाद उन्होंने घुटने की सर्जरी करवाई। जडेजा ने कहा, %पांच महीने क्रिकेट से दूर रहना बहुत मुश्किल था। आराम के दौरान आप चिढ़ने लगते हो। चोट से मैं परेशान था और सर्जरी करवानी ही थी। मैंने सोचा की वर्ल्ड कप से पहले सर्जरी करवाना चाहिए या बाद में। डॉक्टर की सलाह पर मैंने वर्ल्ड कप से पहले सर्जरी करवाई, क्योंकि सर्जरी के बिना भी वर्ल्ड कप खेलना मुश्किल था।

वर्ल्ड कप देखा तो अपने आप को वहीं देख रहा था

जडेजा ने कहा, रिकवरी का समय बहुत मुश्किल होता है। इस दौरान लगातार यही सवाल आता है कि आप कब फिट होंगे। घर से जब टी-20 वर्ल्ड कप देखा तो मुझे लगा कि मैं भी वहीं हूं। ये चीजें आपको मोटिवेट करती हैं। आप अच्छे से ट्रेनिंग और रिहैब करते हैं।

फिजियो और ट्रेनर्स ने बहुत मेहनत की

जडेजा बोले, फिजियो और ट्रेनर्स ने NC में मुझ पर बहुत मेहनत की। संडे को ऑफ रहने पर भी फिजियो मेरे लिए आते थे और मदद करते थे। मैं दो-तीन हफ्ते NC बेंगलुरु में रहता था और फिर माइंड फ्रेश करने के लिए घर जाता था। ज्यादातर टाइम ट्रेनिंग में ही बितता था, जिससे कि मैं जल्दी ठीक हो जाऊं।

वह बोले, NC में भी ट्रेनर्स बहुत मोटिवेट करते थे। जब मैं कहता था कि मुझे बहुत दर्द हो रहा है। तब वो बोलते थे कि आपको मेहनत देश के लिए करना है न कि खुद के लिए। इससे मनोबल बढ़ा।

इंजरी के बाद के दो महीने बहुत मुश्किल थे

जडेजा ने बताया, सर्जरी के बाद के दो महीने मेरे लिए बहुत कठिन थे। इस दौरान आप बाहर भी नहीं जा सकते और चल भी नहीं सकते। इस दौरान परिवार और दोस्त मेरे साथ थे।

पांच महीने बाद की वापसी

इंजरी से पूरी तरह रिकवर होने के बाद 34 साल के जडेजा ने 24 जनवरी को सौराष्ट्र के लिए रणजी ट्रॉफी मैच खेला। जडेजा ने बताया, चोट से रिकवरी के बाद रणजी मैच के पहले दिन मुझे अजीब सा लगा। मैं 5 महीने बाद धूप में क्रिकेट खेलने आया था। इससे पहले पूरे समय मैं इंडोर ट्रेनिंग ही कर रहा था। रणजी में चेन्नई के वेदर में मुझे मुश्किलें हुईं, लेकिन हर दिन मुझे बेहतर महसूस हुआ। पांचवें दिन मुझे लगा कि मैं मैच खेलने के लिए फिट हूं। आपको बड़ा टूर्नामेंट खेलने से पहले कॉन्फिडेंस चाहिए रहता है और वो रणजी में मुझे मिल गया।%

तमिलनाडु के खिलाफ मैच में जडेजा ने 41.1 ओवर बॉलिंग की। पहली पारी में तो उन्हें एक ही विकेट मिला, लेकिन दूसरी पारी में उन्होंने 7 विकेट झटक लिए। उन्होंने बैटिंग करते हुए 23 और 15 रन की पारियां खेल कर खुद को मैच के लिए तैयार साबित किया।

कप्तान रोहित का सबसे बड़ा टेस्ट - ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 4 मैचों की सीरीज रोहित शर्मा के कप्तानी करियर का पहला सबसे बड़ा टेस्ट होगा। 9 फरवरी से नागपुर में पहला टेस्ट खेला जाएगा। फरवरी 2022 में कप्तानी मिलने के बाद रोहित 2 ही टेस्ट में भारत की कप्तानी कर सके। इस बीच इंजरी के कारण वे इंग्लैंड और बांग्लादेश में 3 टेस्ट नहीं खेल सके। पूरी खबर पढ़ने के लिए यहां क्लिक करें।

घर का सामान बिक गया; 10 हजार के लिए इंजरी में भी दौड़ीं, खेलो इंडिया में जीता गोल्ड -खेलो इंडिया यूथ गेम्स की 3000 मीटर दौड़ स्पर्धा में 17 साल की बुसरा खान ने गोल्ड मेडल जीता। मध्य प्रदेश के सीहोर की एथलीट ने 10.04.29 मिनट का समय लेकर पहला स्थान हासिल किया।

रीपा के तहत बूंदी-मिक्कर निर्माण एवं व्यवसाय से मालामाल हो रही हैं समूह की महिलाएं

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की मंशा के अनुरूप ग्रामीण अर्थव्यवस्था को और अधिक समृद्ध बनाने के उद्देश्य से स्थापित हो रहे महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगिक पार्क (रीपा) के तहत बूंदी-मिक्कर निर्माण एवं व्यवसाय से मां संतोषी स्व-सहायता समूह की महिलाएं मालामाल हो रही हैं। जनपद पंचायत गौरेला के ग्राम पंचायत पतरकोनी में रीपा के तहत मिक्कर एवं बूंदी निर्माण इकाई 26 जनवरी 2023 से शुरू हो गया है। लगभग एक सप्ताह में समूह की महिलाओं द्वारा 7 क्विंटल बूंदी और 5 क्विंटल मिक्कर का उत्पादन किया जाकर 150 रूपए प्रति किलो बूंदी और 170 रूपए प्रति किलो मिक्कर के हिसाब से कुल एक लाख 90 हजार रूपए की बिक्री कर चुके हैं। समूह की अध्यक्ष श्रीमती शिशुवती मरपची और सचिव बेला कोर्राम अपने कार्य से खुश हैं और समूह की आमदनी से उत्साहित हैं। चूंकि पतरकोनी मुख्य मार्ग पर स्थित होने के साथ ही साप्ताहिक हाट-बाजार की परिधि से लगा है। यहां व्यावसायिक वातावरण की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए रीपा के तहत स्टोरेज, दुकान, शौचालय, आदि आवश्यक अधोसंरचना के कार्य किए जा रहे हैं

पंडो जनजाति बाहुल्य ग्राम दुर्गापुर के 47 घरों तक पहुंची गुणवत्तायुक्त पेयजल की सुविधा

जल जीवन मिशन की सफलता

प्रत्येक परिवार को गुणवत्तायुक्त पेयजल की उपलब्धता जिला मुख्यालय से लगभग 18 किमी दूर विकासखण्ड बैकुंठपुर के ग्राम पंचायत उमझर का आश्रित गांव दुर्गापुर पंडो जनजाति बाहुल्य ग्राम है। वनवासी जीवन शैली के परिचायक दुर्गापुर गांव में जल जीवन मिशन के तहत प्रत्येक परिवार को गुणवत्तायुक्त पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित कराना चुनौतीपूर्ण रहा। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी के कार्यपालन अभियंता ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि कलेक्टर विनय कुमार लंगेह के मार्गदर्शन में जिले में योजना का बेहतर क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसी कड़ी में जहां चाह, वहां राह को आदर्श सूत्र मानते हुए दुर्गापुर के प्रत्येक परिवार को जल जीवन मिशन के

माध्यम से गुणवत्तापूर्ण पानी उपलब्ध कराने का संकल्प लेकर कार्ययोजना बनाई गई और अंत में ग्रामवासियो के चेहरे पर मुस्कान योजना के फलीभूत होने का प्रमाण खुद ही दे रही है।

जल जीवन मिशन के तहत ग्रामीणों को जागरूक करने महिलाओं को जल वाहिनी के रूप में प्रशिक्षण दिया जाता है। जल जीवन मिशन के तहत जल वाहिनी रामकुमारी सारथी ने बताया कि जल जीवन मिशन के अंतर्गत पीने के पानी की जांच की जाती है जिससे जल की गुणवत्ता की जानकारी प्राप्त होती है।

विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार जल जीवन मिशन के माध्यम से दुर्गापुर के खालपारा और ईबलपारा में 35.78 लाख रुपये की लागत से 47 की संख्या में चिन्हित घरों में नल के माध्यम से गुणवत्तायुक्त पेयजल पहुंचाने का पुनीत कार्य किया जा रहा है। जल जीवन मिशन योजना के तहत हर घर नल से जल पहुंचने से घर तक शुद्ध पेयजल की पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति हो रही है, अब स्वच्छ पेयजल के लिए ग्रामवासियों को भटकना नहीं पड़ता है।

पारंपरिक बकरी पालन को व्यवसाय बनाकर प्रति माह दस हजार से ज्यादा कमा रहे हैं अनिल

कोरिया, कोरिया जिले के वनांचलों में रहने वाले आदिवासी परिवारों के लिए बकरीपालन सदैव से एक परंपरागत कार्य रहा है। प्रोजेक्ट उन्नति के तहत ऐसे परिवार के युवाओं को चयनित कर उन्हे उसी कार्य में पारंगत बनाने का कार्य किया गया है जिसे वह आसानी से अपना सकें। ऐसी ही सफलता का कार्य केशगंवा ग्राम पंचायत में रहने वाले श्री अनिल कुमार बखूबी कर रहे हैं। वह स्वयं बतलाते है कि परिवार के

बड़े पुत्र हैं और उनके परिवार के पास लगभग ढाई एकड़ खेती है। परिवार के सदस्य खेती में संलग्न रहते हैं और बारिश आधारित खेती के बाद उनके परिवार के सभी वयस्क सदस्य महात्मा गांधी नरेगा के तहत अकुशल श्रम करते है। उनके पिता अमोल साय, माता श्रीमती रामकली और दो भाई हैं। दोनो छोटे भाई पढ़ाई करते है। पहले उनका परिवार सिर्फ बारिश पर आधारित खेती करता था और फिर पूरे वर्ष उनके लिए रोजगार की समस्या रहती थी। गत वर्ष जब उन्होने मनरेगा में पूरे 100 दिन का रोजगार पूरा किया तो उन्हे प्रोजेक्ट उन्नति के लिए चयनित किया गया। स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए कोरिया कृषि विज्ञान केंद्र की तरफ से निशुल्क बकरीपालन का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण के बाद वह अपने परिवार के साथ मिलकर बड़े स्तर पर बकरी पालन करने लगे हैं और अब उनके पास 20 से ज्यादा बकरे-बकरियों की संख्या है। इनके विक्रय से अब अनिल के परिवार को आसानी से आठ से दस हजार रूपए प्रतिमाह की आमदनी होने लगी है। पहले केवल खेती और मजदूरी पर आश्रित रहने वाले परिवार के पास अब पैसों की कोई चिंता नहीं है।

अरपा आरोग्यम योग महोत्सव में बड़ी संख्या में शामिल हुए लोग

जिला प्रशासन द्वारा जीपीएम जिले के गठन की तीसरी वर्षगाठ पर 10 फरवरी को अरपा महोत्सव का मुख्य अयोजन किया जा रहा है। महोत्सव के उपलक्ष्य में एक फरवरी से विभिन्न गतिविधियों का अयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज प्रात: 6 से 8 बजे तक स्वस्थ एवं समग्र जीवन शैली के लिए अरपा आरोग्यम योग महोत्सव का आजोजन किया गया। गुरुकुल खेल मैदान गौरेला में आयोजित योग महोत्सव में अपर कलेक्टर बी सी एक्का, संयुक्त कलेक्टर वीरेन्द्र सिंह, डिप्टी कलेक्टर सुश्री

हितेश्वरी बाघे सहित विभिन्न विभागों के अधिकार, कर्मचारी, जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक एवम बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। कार्यक्रम में योग मास्टर निधि अग्रवाल एवम मोहित आर्य ने लोगों को विभिन्न योग आसनो, प्राणायाम, ध्यान के साथ ही स्वस्थ्य जीवन शैली के लिए परामर्श दिया। यह योग महोत्सव 8 फरवरी तक प्रात: 6 से 8 बजे और शाम 4 से 6 बजे तक चलेगा।

राजिम माघी पुन्नी मेला

रायपुर, माघ पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक आयोजित होने वाले सुप्रसिद्ध राजिम माघी पुन्नी मेला का भव्य शुभारंभ आतिशबाजी के साथ मुख्यमंत्री के मुख्य अतिथ्य में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता धर्मस्व, पर्यटन एवं गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू ने की। समारोह में वन मंत्री मोहम्मद अकबर, राजिम

विधायक अमितेष शुक्ल, अभनपुर विधायक धनेन्द्र साहू, सिहावा विधायक डॉ. लक्ष्मी ध्रुव की गरिमामयी उपस्थिति रही। अतिथियों ने भगवान राजीव लोचन की प्रतिमा के समक्ष दीप-प्रज्वलित कर पूजा-अर्चना की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजिम को कमल क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। माघी पुन्नी मेला के स्वरूप को बिगाड़ कर पूर्ववर्ती सरकार ने कुंभ बना दिया, जिनका खूब विरोध हुआ। हमने छत्तीसगढ़ में सत्ता की बागडोर सम्हालने के बाद इसके प्राचीन एवं गरिमामय स्वरूप को यथावत रखने के लिए संशोधन बिल लाया। हमारी सरकार राज्य की संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए लगातार काम कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार द्वारा किसानों के हित के लिए लगातार नए-नए निर्णय लिए जा रहे हैं। इस बार राज्य में रिकार्ड धान खरीदी हुई है। राज्य में 23 लाख 41 से अधिक किसानों से सरकार ने 107.53 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा है। हमरी किसान हितैषी नीतियों के चलते राज्य में खेती का रकबा और किसानों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। बीते 4 सालों में धान बेचने वालों किसानों की संख्या और उर्पाजित धान की मात्रा लगभग दो गुनी हो गई है। किसानों के साथ-साथ सभी वर्गों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए हमने कई नई योजनाएं शुरू की है। गौठान और गोधन न्याय योजना से ग्रमीण अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने तथा ग्रामीणों को रोजगार से जोड़ने का नया अवसर सुलभ हुआ है। गरियाबंद जिले के तीन गौठानों में गोबर से प्राकृतिक पेंट बनाने का काम हो रहा है। अब बिजली उत्पादन का भी काम होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में 10 हजार गौठान बने है। जिससे पशुपालक किसान और गौपालक खुश है। गोधन न्याय योजना के तहत गोबर खरीदी होने से पशुपालकों को अतिरिक्त आय होने लगी है। राज्य में डेयरी की संख्या बढ़ी है। लघु वनोपज से हर गरीब के घर में पैसा आया है। शिक्षा के लिए स्कूल भवन एवं अन्य अधोसंरचना के विकास के लिए 1000 करोड़ की व्यवस्था की गई है।

धर्मस्व मंत्री ताम्रजध्वज साहू ने पुन्नी मेला की बधाई देते हुए कहा कि नवीन मेला ग्राऊंड का विकास किया जा रहा है। अगले साल यह मेला नए मैदान में लगेगा। उन्होंने कहा कि भगवान रामचंद्र जी ने अपने वनवास काल के दौरान छत्तीसगढ़ राज्य में 2200 किलोमीटर की पदयात्रा की थी। वानवास काल के पूरे दस साल छत्तीसगढ़ में गुजारे थे। प्रभु राम के वनवास काल की स्मृतियों को चिरस्थायी बनाने के लिए राम वन गमन पर्यटन परिपथ का विकास किया जा रहा है। भगवान राम वनवास काल के दौरान राजिम से गुजरे थे। यहां राम वन गमन पर्यटन परिपथ के तहत 19 करोड़ रूपए की लागत के काम कराये जा रहे है। उन्होंने कहा कि साढ़े तीन किलोमीटर तक सड़क के लिए 41 करोड़ रूपए का काम

राजिम धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक समागम का केंद्र...मुख्यमंत्री

नवीन मेला मैदान पर होगा। यह सड़क फोरलेन होगी। बोटिंग से लेकर अन्य कार्य आने वाले समय में होगा। मंच, बोर, लेबलिंग का काम शुरू हुआ है। राजिम, चौबेबांधा नवागांव मार्ग के लिए राशि स्वीकृत हुई है। घाट निर्माण भी शुरू हो गया है। मेला में आवश्यकतानुसार जनता को कोई दिक्कत न हो इस बात का ध्यान रखा जा रहा है। साहू ने कहा कि माता राजिम की भक्ति एवं भगवान विष्णु के कृपा इस क्षेत्र पर बनी हुई है।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर छत्तीसगढ़ का सिरपुर ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्ता के कारण है आकर्षण का केंद्र

रायपुर. सिरपुर छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले में महानदी के तट स्थित एक पुरातात्विक स्थल है। इस स्थान का प्राचीन नाम श्रीपुर है यह एक विशाल नगर हुआ करता था तथा यह दक्षिण कोशल की राजधानी थी। सोमवंशी नरेशों ने यहाँ पर राम मंदिर और लक्ष्मण मंदिर का निर्माण करवाया था। ईंटों से बना हुआ प्राचीन लक्ष्मण मंदिर आज भी यहाँ का दर्शनीय स्थान है। उत्खनन में यहाँ पर प्राचीन बौद्ध मठ भी पाये गये हैं।

अंतराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर सिरपुर अपनी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्ता के कारण आकर्षण का केंद्र हैं। यह पांचवी से आठवीं शताब्दी के मध्य दक्षिण कोसल की राजधानी थी। सिरपुर में सांस्कृतिक एंव वास्तुकौशल की कला का अनुपम संग्रह हैं। भारतीय इतिहास में सिरपुर अपने धार्मिक मान्यताओ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण आकर्षण का केन्द्र था और वर्तमान में भी ये देश विदेश के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

सिरपुर महोत्सव का आयोजन

सिरपुर के एतिहासिक महत्व को देखते हुए छत्तीसगढ़ शासन की तरफ से प्रत्येक वर्ष यहां पर सिरपुर महोत्सव का आयोजन किया जाता है। छत्तीसगढ़ के विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल सिरपुर में माघ पूर्णिमा के अवसर पर होने वाले तीन दिवसीय सिरपुर महोत्सव का हर किसी को इंतजार रहता है। खाद्य एवं संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत ने तीन दिवसीय सिरपुर महोत्सव का शुभारंभ करते हुए सभी प्रदेश वासियों को माघी पूर्णिमा सिरपुर महोत्सव की शुभकामनाएं दी हैं।

गंधेश्वर महादेव का मंदिर

सिरपुर का एक अन्य मंदिर गंधेश्वर महादेव का है। यह महानदी के तट पर स्थित है। इसके दो स्तम्भों पर अभिलेख उत्कीर्ण हैं। कहा जाता है कि चिमणाजी भौंसले ने इस मन्दिर का जीर्णोद्वार करवाया था। सिरपुर से बौद्धकालीन अनेक मूर्तियाँ भी मिली हैं। जिनमें तारा की मूर्ति सर्वाधिक सुन्दर है। सिरपुर का तीवरदेव के राजिम-ताम्रपट्ट लेख में उल्लेख है। 14वीं शती के प्रारम्भ में, यह नगर वारंगल के ककातीय नरेशों के राज्य की सीमा पर स्थित था। 310 ई. में अलाउद्दीन खलिजी के सेनापति मलिक काफूर ने वारंगल की ओर कूच करते समय सिरपुर पर भी धावा किया था, जिसका वृत्तान्त अमीर खुसरो ने लिखा है।

आधुनिकता के दौर में बौद्ध विरासत, लोककला एवं संस्कृति का केंद्र

सिरपुर महोत्सव आधुनिकता के दौर में भी अपनी प्राचीन संस्कृति और भव्यता को बनाये हुए है। युवा पीढ़ी को यहाँ की बौद्ध विरासत तथा लोककला एवं संस्कृति को जानने का अवसर मिलता है। सिरपुर लोगों की आस्था और श्रद्धा का केन्द्र है जिसे देखने और महसूस करने के लिए देश विदेश से लोग यहां पहुंचते हैं। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में राज्य में हर तरफ विकास के काम हो रहे हैं। मुख्यमंत्री ने राज्य के लोक कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए योजना बनायी है जिससे स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहन मिल रहा है।

ग्राम चेटबा के सहेली स्व सहायता समूह की महिलाओं ने ऐग हैचरी एवं चिक प्रोडक्शन यूनिट को बनाया अपने आजीविका का आधार

34000 का लाभ प्राप्त कर चुकी है महिलाएं

जशपुरनगर. छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत जशपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत महिलाओं को समूह के रूप में गठित एवं प्रेरित कर स्व रोजगार से जोड़े जाने की महत्वाकांक्षी योजना सार्थक साबित हो रही है। आज एनआरएलएम की महिलाएं स्व सहायता समूह से जुड़ कर सफलता की नयी कहानियॉ लिख रहीं हैं और अपने सपने को पंख देकर नयी उड़ान के लिए तैयार हैं। तीनों स्तर की पंचायतों एवं एनआरएलएम बिहान टीम की सहायता से इन महिलाओं की सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे है। कलेक्टर डां रवि मित्तल के मार्गदर्शन और जिला पंचायत सीईओ जितेन्द्र यादव के दिशा निर्देश में आजीविका से जुड़कर महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही है

इसी कड़ी में कांसाबेल विकासखण्ड के ग्राम चेटबा के सहेली स्व सहायता समूह के द्वारा ऐग हैचरी एवं चिक प्रोडक्शन यूनिट को अपने आजीविका का आधार बनाया है। इस समूह में 12 महिलाएं शामिल हैं। सहेली स्व सहायता समूह बिहान योजना द्वारा संचालित है। जिसका गठन को करके क्षमता वर्धन का कार्य विकासखण्ड मिशन प्रबंध इकाई एवं अभिसरण के माध्यम से किया गया है। सहेली स्व सहायता समूह बिहान में जुड़ने के बाद जिन्दगी में कुछ कर गुजरने एवं अच्छे मुकाम में पहुंचने की प्रेरणा मिली। जिससे अपने आर्थिक विकास के लिए कुछ न कुछ आजीविका संबंधित कार्य करना चाहती थी। इसलिए वे समूह के 11 सूत्रों का नियमत: पालन करते हुए चक्रिय निधी राशि 15000 रूपए, सामुदायिक निवेश कोष राशि 60000 रूपए एवं बैंक लिंकेज की राशि 60000 रूपए प्राप्त कर स्व सहायता समूह द्वारा जिला प्रशासन के मार्गदर्शन में ऐग हैचरी एवं चिक प्रोडक्शन युनिट प्रारंभ किया गया। ऐग हैचरी एवं चिक प्रोडक्शन युनिट में सर्वप्रथम 720 अण्डा हैचिंग के लिए डाला गया। जिसमें से 634 अण्डा से फूट कर चुजा प्राप्त हुआ। सहेली स्व सहायता समूह द्वारा 720 अण्डा 10800 रूपए में खरीदा गया एवं उस अण्डा से चूजा उत्पादन कर 634 चूजा को विक्रय कर कुल लाभ राशि 34870 रूपए प्राप्त किया गया।

चुकिं स्थानीय एरिया में समूह के सभी दिदीयों द्वारा मुर्गीपालन किया जाता है। जिससे अण्डा हैचिंग के लिए आसानी से समूह द्वारा एकत्रित कर लिया जाता है एवं कुछ अण्डा मुर्गी पालकों से खरीद कर उसे मशीन द्वारा हैचिंग करवाकर चूजा प्राप्त कर लिया जाता है। इस प्रकार सहेली स्व सहायता समूह एक उद्यमिता की सोच लेकर आगे बढ़ रही है। समूह में जुड़ने से पहले समूह के सभी सदस्यों का आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी और जीवन एक सामान्य मेहनत-मजदूरी पर निर्भर था। कम आय की वजह से समूह की दीदियॉ घर एवं परिवार की समस्या से हमेशा घिरी हुई रहती थी।

छत्तीसगढ़ में सिरपुर महोत्सव का है विशेष महत्व

छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थानों में महोत्सव व मड़ई-मेला का आयोजन ख़ास पर्व व तिथियों में किया जाता है। लेकिन सिरपुर महोत्सव का भी विशेष महत्व है। प्रतिवर्ष यह महोत्सव महानदी तट पर माघ पूर्णिमा के दिन से शुरू होता है। तीन दिवसीय सिरपुर महोत्सव आस-पास गांव के लोग भोर के समय महानदी में स्नान कर गंधेश्वर नाथ मंदिर में पूजा अर्चना करते है। तीन दिवसीय महोत्सव का शुभारंभ खाद्य एवं संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत महोत्सव के तीनों दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा जिला स्तरीय रामायण मंडली प्रतियोगिता का भी आयोजन होगा। इसके साथ ही विभिन्न विभागों द्वारा विकास गतिविधियों और विभागीय योजनाओं पर आधारित प्रदर्शनी, स्व-सहायता समूहों द्वारा स्टॉल में बिक्री हेतु सजेंगे। वहीं बच्चों के लिए झूले-सर्कस अन्य रोमांचक गतिविधियां देखने मिलती है। बच्चे युवा व सभी उम्र के लोग मेले में घूम-फिर कर रोमांचित होते है और अपनी खुशियों का इजहार करते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छत्तीसगढ़ लोक गीत, नृत्य, नाटक, नाचा, गम्मत, पंथी, कर्मा और डंडा नृत्य के साथ ही कत्थक एकल नृत्य, ओड़िशी नृत्य के साथ ही बॉलीवुड कलाकार ईशिता विश्वकर्मा एवं टीम मुंबई की प्रस्तुति देखने को मिलेगी।

सिरपुर अपनी ऐतिहासिक व पुरातात्विक महत्ता के कारण आकर्षण का केंद्र हैं। यह पांचवी से आठवीं शताब्दी के मध्य दक्षिण कोसल की राजधानी थी। यह स्थल पवित्र महानदी के किनारे पर बसा हुआ हैं। सिरपुर में सांस्कृतिक व वास्तु कौशल की कला का अनुपम संग्रह हैं। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल 2021 में सिरपुर बौद्ध महोत्सव में शामिल हुए थे। उन्होंने सिरपुर के विकास के लिए 213.43 लाख के कार्यों की घोषणा की। जिनमें भव्य स्वागत गेट का निर्माण, सिरपुर मार्ग 4 तालाबों का सौंदर्यीकरण, सिरपुर मार्ग पर 5 सुंदर सुगंधित कौशल्या उपवन निर्माण, कोडार-पर्यटन कोडार जलाशय तट पर वृक्षारोपण और सिरपुर के रायकेरा तालाब आदि थी। मुख्यमंत्री की घोषणा अनुरूप सभी काम पूरे हो गए। सैलानियों के लिए रायकेरा तालाब में बोटिंग पिछले साल से शुरू हो गयी है। वही नज़दीक कोडार जलाशय में नौका विहार के लिए बोटिंग की सुविधा सैलानियों को उपलब्ध है। वहीं कम दाम पर टेंटिंग में ठहरने के इंतजाम भी किए गए हैं। फिलहाल चार टेटिंग लगाए गए है। जिसमें एक टेंटिंग में दो व्यक्तियों के सोने और आराम करने के लिए पर्याप्त जगह है। टूरिस्ट और बच्चों के लिए क्रिकेट, वालीबाल, कैरम, शतरंज के साथ ही निशानेबाजी की सुविधा भी इस इको पर्यटन केंद्र में उपलब्ध है।

सिरपुर पहले से ही प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर है। वृक्षारोपण के ज़रिए इसे और भी हरा-भरा किया जा रहा है। पर्यटकों के विश्राम सुविधा के लिए पाँच सुगंधित फूलों वाली सुंदर कौशल्या उपवन वाटिकाएं तैयार हो गई है। इन उपवनों में प्रतिदिन रामचरित मानस का पाठ, भजन-कीर्तन स्थानीय मंडलियों द्वारा किया जा रहा है। वृक्षारोपण में बेर, जामुन, पीपल, बरगद, नीम, करंज, आंवला आदि के पौधें शामिल किए गए है। ताकि ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ लोगों को जैव विविधता का ऐहसास भी हो। इस इलाके में राम वन गमन पथ में छह ग्राम पंचायतों को मुख्य केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। जिसमें अमलोर, लहंगर, पीढ़ी, गढ़सिवनी, जोबा व अछोला शामिल है। सड़क के दोनों किनारों पर फलदार, छायादार पौधें लगाए जा रहे है।

सिरपुर को राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय हेरिटेज के रूप में विकसित करने और ज्यादा पहचान दिलानें शासन कटिबद्ध है। जो भी जरूरी कार्य है किए जा रहे है। सिरपुर बहुत ही विस्तृत है। जो लगभग 10 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है और इस तरह अन्य जगह विस्तारित बौद्ध केन्द्र नहीं हैं। सिरपुर, डोंगरगढ़ और मैनपाट को टूरिज्म सर्किट से जोडने् की तैयारी की जा रही है। पर्यटन सर्किट से जुड़ जाने से इस ओर सैलानियों का रूझान बढ़ेगा। जल्दी ही सिरपुर पूरे विश्व मानचित्र पर अंकित होगा। छत्तीसगढ़ का प्राचीनकाल से ही सभी क्षेत्रों में बढ़-चढ़कर योगदान रहा है। छत्तीसगढ़ हमेशा से देवभूमि रहा है। सिरपुर शिव, वैष्णव, बौद्ध धर्मों के प्रमुख केन्द्र भी है।

जिला अस्पताल में भर्ती मरीजों के लिए मात्र 800 रुपये एवं बाहरी मरीजों को 1500 रुपये में मिलेगा लाभ

बलौदाबाजार, कलेक्टर रजत बंसल ने आज जिला अस्पताल पहुंचकर आपातकालीन चिकित्सा विभाग में लग रहे बहुप्रतीक्षित सीटी स्कैन सुविधा की जानकारी ली। सालों इंतजार के बाद इस सेवा की शुरुआत होने पर अब जिला अस्पताल पहुंचे मरीजों को सीटी स्कैन के लिए निजी अस्पताल या अन्य शहरों के चक्कर लगाने से मुक्ति मिलेगी। अभी तक इसकी सेवा सरकारी अस्पताल में नहीं थी। यह सेवा शुरू होने से लोगों को राहत तो होगी ही इस लाभ के लिए न्यूनतम शुल्क भी निर्धारित कर दी गयी है। इसके तहत जिला अस्पताल में भर्ती मरीजों के लिए मात्र 800 रुपये तथा बाहरी मरीजों के लिए 1500 शुल्क निर्धारित की गयी है। वर्तमान में अभी प्रायवेट हॉस्पिटल एवं डायग्नोस्टिक सेंटरों में सीटी स्कैन कराने में करीब 3000 से 5,000 रुपए लिए जाते हैं।

कोरोनाकाल में सीटी स्कैन की कमी के कारण सैकड़ों लोगों को अधिक कीमत पर निजी हॉस्पिटलों से सिटी स्कैन कराना पड़ता था। हालांकि लंबे समय से उठ रही मांग और जरूरत को मद्देनजर शासन द्वारा जिला अस्पताल में सीटी स्कैन की अनुमति दी गई। अनुमति मिलने के बाद कलेक्टर रजत बंसल और जिला प्रशासन की पहल पर जिला अस्पताल में सिटी स्कैन मशीन स्थापित की गई। अस्पताल में सीटी स्कैन सुविधा नहीं होने पर न केवल गंभीर मरीजों को बल्कि छोटी मोटी दुर्घटना में सिर पर चोट लगने पर सीटी स्कैन कराने निजी अस्पताल में रिफर करना पड़ता था।

जिला अस्पताल के आपातकाल चिकिस्ता विभाग में लगाए गए सीटी स्कैन मशीन तथा संबंधित चिकित्सा उपकरणों की लागत 2 करोड़ 98 लाख रुपए है जो कि जर्मनी से मंगाया गया है। यह जिले में स्थापित पहला मशीन हैं। जिसका त्वरित लाभ मरीजों को मिलेगा।

सीटी स्कैन या कम्प्यूटराइज्ड टोमोग्राफी एक्स-रे का एक रूप होता है, जिसे कम्प्यूटराइज एक्सीयल टोमोग्राफी भी कहा जाता है। यह शरीर के अंगों के चित्र को दिखाता है। अधिकतर सीटी स्कैन शरीर के विभिन्न अंगों से जुड़ी बीमारियों के लक्षणों का पता लगाने के लिए किया जाता है। इसकी मदद से शरीर के विभिन्न भागों में नरम उतको, रक्त वाहिकाओं और हड्डियों को दिखा सकते हैं। सिटी स्कैन मशीन में शरीर के अंदर के कई अंदरूनी भागों जैसे सिर, कंधों, रीढ़ की हड्डियों, दिल, पेट, घुटना, छाती सहित अन्य अंदरूनी हिस्सों को सिटी स्कैन की मदद से जानकारी मिल जाती है।

जिला अस्पताल के बाहरी मार्ग पर लम्बे समय से लोगों द्वारा अतिक्रमण किया गया है। कलेक्टर रजत बंसल ने जिला अस्पताल पहुंच अतिक्रमण हटाने और जिला अस्पताल परिसर पर साफ सफाई करने के निर्देश दिए। ताकि आने वाले मरीजों को उचित समय पर राहत मिल सके।

उक्त निरीक्षण के दौरान जिला पंचायत सीईओ गोपाल वर्मा,सिविल सर्जन डॉ राजेश अवस्थी,सीएचएमओ डॉ महिस्वर सहित स्वास्थ्य विभाग के अन्य अधिकारी गण उपस्थित रहे।

बेटियों के लिए सहारा बनी नोनी सुरक्षा योजना

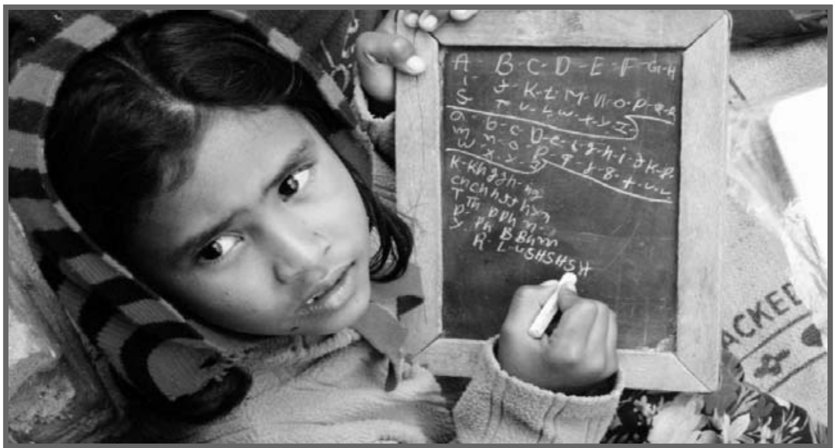

योजना के तहत अब तक 76 हजार से अधिक बेटियां हुई पंजीकृत

रायपुर, गरीब परिवार में जन्म लेने वाली बेटियों के लिए नोनी सुरक्षा योजना बड़ा सहारा बन रही है। इससे परिवार की बेटियों के भविष्य को लेकर चिंता दूर हुई है। योजना के तहत गरीब परिवार की बेटियों को 18 वर्ष पूरा होने और 12वीं उत्तीर्ण होने पर एक लाख रूपए प्रदान किए जाते हैं। इसके लिए जीवन बीमा निगम एवं महिला एवं बाल विकास विभाग के मध्य अनुबंध किया गया है। नोनी सुरक्षा योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा गरीब परिवारों की पंजीकृत बालिका के नाम पर भारतीय जीवन बीमा निगम में 05 वर्ष तक प्रति वर्ष 5 हजार रूपये अर्थात कुल 25 हजार रूपये जमा किए जाते हैं। योजना के तहत अब तक 76 हजार 477 बच्चियों का पंजीयन किया गया है। वर्ष 2021-22 में 11 हजार 765 बेटियों को योजना का लाभ दिया गया है।

जनगणना वर्ष 2001 के आंकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ में बाल लिंगानुपात प्रति हजार 975 था जो कि जनगणना वर्ष 2011 में घटकर एक हजार के अनुपात में 969 हो गया। इस प्रकार राज्य में घटते बाल लिंगानुपात तथा बालिकाओं के प्रति समाज में सकारात्मक सोच बढ़ाने के लिए 01 अप्रैल 2014 से ''नोनी सुरक्षा योजना'' लागू की गई। योजना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में बालिकाओं की शैक्षणिक तथा स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार लाना, बालिकाओं के अच्छे भविष्य की आधारशिला रखना, बालिका भ्रूण हत्या रोकना और बालिकाओं के जन्म के प्रति समाज में सकारात्मक सोच लाना और बाल विवाह की रोकथाम करना है।

छत्तीसगढ़ राज्य के मूल निवासी तथा गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की 01 अप्रैल 2014 के बाद जन्मी अधिकतम दो बालिकाओं को योजना के तहत लाभ मिलता है। योजना के शुरू होने से शहरी क्षेत्रों के गरीब परिवारों के साथ दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों में बसे परिवारों में भी बेटियों के भविष्य की चिंता दूर हुई है। योजना का लाभ लेने के लिए जिला स्तर पर जिला कार्यक्रम अधिकारी, जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी और विकासखण्ड स्तर पर बाल विकास परियोजना अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है।

महिला एवं बाल विकास विभाग सूरजपुर जिले में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार वहां अभी तक 4193 बच्चियों को चिन्हांकित कर ऑनलाईन एंट्री कर दी गई है। इनमें से 1032 बच्चियों को

एलआईसी के द्वारा जारी बॉण्ड प्रदान किया गया है। छत्तीसगढ़ सरकार की पहल नोनी सुरक्षा योजना लागू किये जाने से लड़कियों के उज्जवल भविष्य की राह आसान हो गयी है और बाल विवाह और कन्या भ्रूण हत्या की घटनाओं में कमी आ रही है।

हाथी प्रभावित क्षेत्रों में किसान बिना किसी डर के कर सकेंगे फसलों की देख-रेख

मुख्यमंत्री की पहल पर सूरजपुर जिले के हाथी प्रभावित क्षेत्रों में लगा 33 नग सोलर हाईमास्ट लाइट

रायपुर. सूरजपूर जिले के प्रतापपुर क्षेत्र के किसान खेती-किसानी और फसल की देखरेख बिना किसी डर के आसानी से कर सकेंगे इसके अलावा उन्हें हाथी आने पर सुरक्षित स्थानों में पहुंचने में मद्द मिल सकेंगी। मुख्यमंत्री बघेल की पहल पर इस क्षेत्र के हाथी प्रभावित गांवो में 33 नग सोलर हाईमास्ट लाइट लगाए गए हैं।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री के प्रदेशव्यापी भेंट-मुलाकात कार्यक्रम के दौरान सूरजपुर जिले के प्रतापपुर विकासखंड के हाथी प्रभावित क्षेत्र के ग्राम गोविंदपुर के ग्रामवासियो ने मुख्यमंत्री से हाथी प्रभावित क्षेत्रों में सोलर हाईमास्ट लाईट लगाने की मांग की थी। ग्रामीणों का कहना था कि गांव में अंधेरा होने के कारण हाथी आने पर ग्रामीणों को सुरक्षित स्थान में शरण लेने के लिए अन्य स्थान आने-जाने में असुविधा का समाना करना पड़ता था। सोलर हाईमास्ट लाईट लगने से उन्हें सुरक्षित स्थान पर आने-जाने में मद्द मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों की मांग पर मौके पर ही सोलर हाईमास्ट लाईट लगाने के निर्देश अधिकारियों को दिए थे। मुख्यमंत्री की इस घोषणा पर जिला प्रशासन, वन विभाग और क्रेडा के अधिकारियों ने फौरी अमल करते हुए हाथी प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया और सोलर हाईमास्ट लगाने के लिए उपयुक्त स्थल का चयन किया। क्रेडा द्वारा चयनित स्थल पर 33 नग सोलर हाईमास्ट लाईट लगाए जा चुके हैं।

हाथी प्रभावित गांवो में सोलर हाईमास्ट लाईट लगने से ग्रामीण प्रसन्न हैं। गांव से लगे आस-पास के वनों के पास अब प्रकाश की व्यवस्था हो गई है। इससे हाथी आने की जानकारी उन्हें पहले से मिल सकेगी। साथ ही शाम को खेतों से लौटते वक्त अंधेरे का सामना नहीं करना पड़ेगा। अब वे फसल की देखभाल बिना किसी डर के कर सकेंगे इसके अलावा उन्हें सुरक्षित ठिकाने जाने में आसानी होगी। ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री की पहल पर हाथी प्रभावित क्षेत्रों में सोलर लाईट लगने पर उनके प्रति धन्यवाद और आभार व्यक्त किया।

जशपुरिया स्ट्राबेरी से महकेगा छत्तीसगढ़

धान के मुकाबले 8 से 9 गुना फायदा

महाराष्ट्र, हिमांचल प्रदेश में उत्पादित स्ट्राबेरी की खेती अब छत्तीसगढ़ में

छत्तीसगढ़ के ठंडे क्षेत्रों में स्ट्राबेरी की खेती लोकप्रिय हो रही है। अपने लजीज स्वाद और मेडिसिनल वेल्यू के कारण यह बड़े स्वाद के खाया जाता है। राज्य के जशपुर, अंबिकापुर, बलरामपुर क्षेत्र में कई किसान इसकी खेती कर रहे हैं। स्ट्राबेरी की मांग के कारण यह स्थानीय स्तर पर ही इसकी खपत हो रही है। इसकी खेती से मिलने वाले लाभ के कारण लगातार किसान आकर्षित हो रहे हैं। एक एकड़ खेत में इसकी खेती 4 से 5 लाख की आमदनी ली जा सकती है। जशपुर जिले में 25 किसानों ने 6 एकड़ में स्ट्राबेरी की खेती की है। जशपुर में विंटर डान प्रजाति की स्ट्राबेरी के पौधे लगाए गए हैं। इन किसानों को उद्यानिकी विभाग की योजना राष्टीय बागवानी मिशन के तहत तकनीकी मार्गदर्शन और अन्य सहायता मिल रही है। किसानों का कहना है कि छत्तीसगढ़ में होने वाली स्ट्राबेरी की गुणवत्ता अच्छी है और साथ ही स्थानीय स्तर पर उत्पादन होने के कारण व्यापारियों को ताजे फल मिल रहे हैं। जिसके कारण उन्हें अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है। स्ट्राबेरी की खेती धान के मुकाबले कई गुना फायदे का सौदा है। जहां धान की खेती के लिए मिट्टी का उपजाऊपन के साथ साथ ज्यादा पानी और तापमान की जरूरत होती है वहीं स्ट्राबेरी के लिए सामान्य भूमि और सामान्य सिंचाइ में भी यह बोई जा सकती है। धान की खेती में जहां देख-रेख की ज्यादा जरूरत पड़ती है वहीं स्ट्राबेरी के लिए देख-रेख की कम जरूरत पड़ी है, सिर्फ इसके लिए ठंडे मौसम की जरूरत होती है। जहां धान से एक एकड़ में करीब 50 हजार की आमदनी ली जा सकती है वहीं स्ट्राबेरी की खेती में 3 से 4 लाख की आमदनी हो सकती है। इस प्रकार धान से 8-9 गुना आमदनी मिलती है। स्ट्राबेरी की खेती छत्तीसगढ़ के ठंडे क्षेत्रों में ली जा सकती है। इसके लिए राज्य के अंबिकापुर, कोरिया, बलरामपुर, सूरजपुर जशपुर का क्षेत्र उपयुक्त है। जशपुर में जलवायु की अनूकूलता को देखते हुए 25 किसानों ने 6 एकड़ में स्ट्राबेरी की फसल ली गई है। इन किसानों ने अक्टूबर में स्ट्राबेरी के पौधे रोपे और दिंसबर में पौधे से फल आना शुरू हो गए। फल आते ही किसानों ने हरितक्राति आदिवासी सहकारी समिति के माध्यम से या स्वयं अच्छी पैकेजिंग की। पैकेजिंग के साथ कुछ समय में प्रतिसाद मिलना शुरू हो गए। जशपुर में 25 किसानों ने दो-दो हजार पौधे लगाए हैं। इससे हर किसान को अब तक करीब 40 से 70 हजार रूपए की आमदनी हो चुकी है। किसानों ने बताया कि स्ट्राबेरी के पौधों पर मार्च तक फल आएंगे, इससे करीब एक किसान को एक से डेढ़ लाख रूपए की आमदनी संभावित है। वहीं एक किसान से करीब 3000 किलो स्ट्राबेरी फल होने और सभी किसानों से कुल 75000 किलोग्राम स्ट्राबेरी के उत्पादन होने की संभावना है। जशपुर के किसान धनेश्वर राम ने बताया कि पहले उनके पास कुछ जमीन थी जो अधिक उपजाऊ नहीं थी वह बंजर जैसी थी। मुश्किल से कुछ मात्रा में धान की फसल हो पाती थी। जब उन्हें विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन मिलने पर फलों की खेती प्रारंभ की।

ठंडे क्षेत्र खेती के लिए उपयुक्त

जमीन का उपजाऊ होना आवश्यक नहीं

धान खरीदी की व्यवस्थाओं से किसान हुए गदगद

बलौदाबाजार. धान खरीदी के अंतिम दिन कुल 62 किसानों ने 385 क्विंटल धान बेचकर धान खरीदी त्यौहार का समापन किया। 1 नवम्बर से प्रारंभ हुई धान खरीदी के तहत जिले के 1 लाख 49 हजार 166 किसानों से 6 लाख 18 हजार 605 मे.टन धान खरीदी की गई है। जिसके एवज में सभी किसानों को कुल 12 सौ 62 करोड़ 13 लाख 82 हजार 464 रूपये राशि का भुगतान किया गया है। इस वर्ष धान खरीदी की समुचित व्यवस्थाओं से किसान काफी गदगद हुए है। उन्होंने शासन की खरीदी व्यवस्था की तारीफ करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त किया है।

जिले के 1 लाख 49 हजार 166 किसानों ने 6 लाख 18 हजार 605 मे.टन का बेचे अपना धान

जिले के खाद्य अधिकारी विमलेश दुबे ने बताया कि जिले में 1 लाख 53 हजार 491 किसान पंजीकृत थे। जिसमें 162 धान उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से 1 लाख 49 हजार 166 किसानों ने 6 लाख 18 हजार 605 मे.टन धान बेचे है। जो कि कुल रकबा का 96.83 प्रतिशत है। जिसमें मोटा धान 1 लाख 26 हजार 221 मे.टन, पतला 9 हजार 132 में टन एवं सरना 4 लाख 83 हजार 250 मे.टन शामिल है। इसके साथ ही 91 प्रतिशत धान का उठाव उपार्जनों केन्द्रों से किया जा चुका है। आने वाले दिनों में उक्त उठाव 100 प्रतिशत हो जायेगी। इसी तरह जिले के 15 सहकारी बैंक शाखाओं के माध्यम किसानों के खाते में 12 सौ 62 करोड़ 13 लाख 82 हजार 464 रूपये राशि का भुगतान डीबीटी के माध्यम से किया जा चुका है। लाभान्वित किसानों में शाखा कोसमंदी के 5706 किसानों को 45 करोड़ 1 लाख 75 हजार 352 रूपये, पलारी 5983 किसानों को 47 करोड़ 9 लाख 48 हजार 184 रूपये, निपनिया 10283 किसानों को 93 करोड़ 77 लाख 44 हजार 120 रूपये, कोदवा 9742 किसानों को 81 करोड़ 23 लाख 80 हजार 712 रूपये, वटगन 6288 किसानों को 55 करोड़ 3 लाख 36 हजार 360 रूपये, भटभेरा 8116 किसानों को 65 करोड़ 48 लाख 92 हजार 576 रूपये, कसडोल 13041 किसानों को 1 सौ 6 करोड़ 54 लाख 33 हजार 248 रूपये, हथबंद 7941 किसानों को 67 करोड़ 6 लाख 31 हजार 272 रूपये, भाटापारा 11795 किसानों को 98 करोड़ 66 लाख 32 हजार 632 रूपये, लवन 13021 किसानों को 1 सौ 4 करोड़ 11 लाख 38 हजार 768 रूपये, टुण्ड्रा नवीन 9218 किसानों को 73 करोड़ 82 लाख 50 हजार 704 रूपये, बलौदाबाजार 16204 किसानों को 1 सौ 38 करोड़ 74 लाख 37 हजार 552 रूपये, सिमगा 14942 किसानों को 1 सौ 21 करोड़ 39 लाख 47 हजार 264 रूपये, बया 9194 किसानों को सौ करोड़ 44 लाख 77 हजार 568 रूपये एवं रोहांसी 7692 किसानों को 63 करोड़ 69 लाख 56 हजार 152 रूपये राशि का भुगतान किया गया है।

कलेक्टर ने धान खरीदी में लगे अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति जताया आभार कलेक्टर रजत बंसल ने जिलें मे निर्विवाद पूर्ण तरीके से धान खरीदी होने पर खरीदी में लगे विभिन्न विभागों के सभी मैदानी कर्मचारी, अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के निर्देशो के अनरूप धान खरीदी में किसी भी किसान को कोई तकलीफ न हो इसका मैदानी कर्मचारियों ने विशेष ध्यान रखा। सभी ने बहुत मेहनत किया जिसका ही परिणाम है कि धान खरीदी में कोई बड़ी समस्याओं का सामना जिले में नहीं करना पड़ा। किसानों के लिए बारदानों से लेकर किसानों के पीने की पानी तक कि व्यवस्था सुचारू रूप से किया गया था जो कि काबिलेतारीफ है।

शिक्षा,स्वास्थ्य, कृषि,पोषण सहित शासन की योजनाओं की मिल रही जानकारी

जाज्वल्यदेव लोक महोत्सव मेला स्थल में लगाए गए हैं स्टॉल

जांजगीर-चाम्पा. शासकीय हाई स्कूल मैदान में आयोजित जाज्वल्य देव् महोत्सव एवं एग्रीटेक कृषि मेला स्थल में एक तरफ जहाँ लोग विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों से आकर्षक मनोरंजन का आनन्द उठा रहे हैं, वहीं मिलेट थीम पर आयोजित कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉल से शासन के विभिन्न योजनाओं की जानकारी भी ले पा रहे हैं। उन्हें शिक्षा,स्वास्थ्य,कुपोषण दूर करने, पेयजल आपूर्ति व शुद्धता सहित विभिन्न उत्पादों की जानकारी मिलने के साथ छत्तीसगढ़ी व्यंजनों का स्वाद लेने और अन्य मनपसंद उत्पाद को क्रय करने का अवसर भी मिल रहा है।

जाज्वल्यदेव् लोक महोत्सव का शुभारंभ आज से हो गया है। तीन दिवसीय महोत्सव में सांस्कृतिक छटा की शुरुआत हो चुकी है। पहले दिन प्रसिद्ध पंडवानी गायिका श्रीमती ऋतु वर्मा ने शानदार प्रस्तुति से समा बाँधा। अपने भाव भंगिमाओं से प्राचीन गाथाओं के कालखंड को प्रस्तुत कर तालियां बटोरी। स्थानीय कलाकारों ने भी आर्केस्ट्रा से लोगों का मनोरंजन किया। महोत्सव स्थल पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग,छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन बिहान, सी-मार्ट, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, आयुष विभाग, आदिवासी विकास विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग,ग्रामोद्योग व हथकरघा विभाग, विधिक साक्षरता सहित अन्य विभागों द्वारा स्टॉल लगाकर विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी जा रही है। नगर पालिका द्वारा स्व सहायता समूह के द्वारा तैयार उत्पादों की जानकारी दी गई है।

नि:शुल्क पानी की जाँच करा सकते हैं

कार्यक्रम स्थल पर लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा एकल ग्राम जल प्रदाय योजना को प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही विभाग द्वारा नि:शुल्क जल परीक्षण की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। आम नागरिक अपने घर से किसी बोतल में एक लीटर पानी लाकर उसका परीक्षण करा सकते हैं। यहाँ विशेषज्ञ द्वारा जल परीक्षण के साथ इसे शुद्ध करने की विधि भी बताई जाएगी।

नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच की सुविधा दी जा रही है। स्टॉल में शुगर तथा ब्लड प्रेशर की जाँच के साथ दवाइयां भी दी जा रही है। आयुष विभाग द्वारा भी जाँच के साथ दवाइयां दी जा रही है।

छत्तीसगढ़ में महिलाएं बना रही पेंट, महात्मा गांधी का सपना हो रहा पूरा

रायपुर,गांवों में लिपाई-पुताई के काम आने वाले गोबर से अब इमल्शन और डिस्टेंपर पेंट तैयार किए जा रहे हैं। छत्तीसगढ़ की महिलाओं का बनाया गया पेंट मल्टी नेशनल कंपनियों को टक्कर दे रहा है। पेंट निर्माण में मल्टी नेशनल कंपनियों के एकाधिकार को गांवों की महिलाएं तोड़ रही हैं। छत्तीसगढ़ सरकार ने महिलाओं द्वारा तैयार किए जा रहे इस उच्च गुणवत्ता के पेंट को देखते हुए सभी शासकीय भवनों की पुताई कराने के निर्देश दिए हैं। लोक निर्माण विभाग द्वारा इसके लिए एसओआर भी जारी कर दिया गया है।

छत्तीसगढ़ी पेंट के आगे मल्टी नेशनल रंग पड़े फीके

राजधानी रायपुर के जरवाय गौठान, दुर्ग जिले के गांव लिटिया और कांकेर के सराधुननवागांव में गोबर से प्राकृतिक पेंट बनाने का कार्य शुरू किया गया है। पेंट निर्माण में अमूमन मल्टी नेशनल कंपनियां ही काबिज थीं लेकिन अब ग्रामीण महिलाएं भी इस क्षेत्र में मजबूती से कदम रख चुकी हैं। गोबर से बनने वाला प्राकृतिक पेंट बिल्कुल मल्टी नेशनल कंपनियों के द्वारा तैयार किए गए पेंट जैसा है। इसकी गुणवत्ता उच्च स्तरीय है, यह पेंट एंटी बैक्टीरिया और एंटीफंगल होता है।

गोबर से पेंट और वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर महिलाएं महात्मा गांधी जी के आत्मनिर्भर गांव की कल्पना को साकार कर रही हैं। इससे गांव के लोगों को रोजगार के साथ ही उनकी तरक्की के लिए नए-नए अवसरों का निर्माण हो रहा है। जरवाय गौठान में डिस्टेंपर, इमल्शन पेंट के साथ ही पुट्टी का भी निर्माण हो रहा है। इसकी बिक्री राजधानी रायपुर के सीजी मार्ट में की जा रही है। इसे जल्द ही विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्म पर भी उपलब्ध कराने की योजना है। यह पेंट मल्टी नेशनल कंपनी के पेंट की तुलना में 30 से 40 प्रतिशत सस्ता होने के साथ ही यह पर्यावरण के अनुकूल भी है।

गोबर से बने इस पेंट की कीमत बाजार में उपलब्ध प्रीमियम क्वालिटी के पेंट की तुलना में 30 से 40 फीसदी कम है। इमल्शन पेंट की कीमत 225 रूपए प्रति लीटर है। यह 1,2,4 और 10 लीटर के पैकेज में तैयार किया जा रहा है। साथ ही यह बड़ी कम्पनियों के पेंट की तरह करीब 4 हजार रंगों में भी उपलब्ध है। साथ ही पुट्टी डिस्टेंपर भी तैयार किया जा रहा है।

राष्ट्रीय स्तर की संस्था से प्रमाणित एवं गुणवत्तापूर्ण यह पेंट भारत सरकार की संस्था राष्ट्रीय प्रशिक्षण शाला के द्वारा प्रमाणित भी किया गया है। साथ ही इसके इसके विभिन्न प्रकार के गुण है यह एन्टी बैक्टीरिया, एंटीफंगल, इको-फ्रेंडली, नॉन टॉक्सिक है। यह भी वैज्ञानिक संस्थान द्वारा प्रमाणित है। इस प्राकृतिक पेंट में हैवी मटेरियल का उपयोग नही किया गया है और यह नेचुरल थर्मल इन्सुलेटर है अर्थात् इसमें चार से पांच डिग्री तापमान करने की क्षमता भी है।

रायपुर, दुर्ग और कांकेर के यूनिट में निर्माण शुरू यह राजधानी के जरवाय गौठान गोवर्धन क्षेत्र स्तरीय महिला स्व सहायता समूह द्वारा लक्ष्मी ऑर्गेनिक संस्थान के सहयोग से बनाई जा रही है। इस समय इस गौठान में स्थापित यूनिट द्वारा प्रतिदिन 2 हजार लीटर इमल्शन पेंट बनाने की क्षमता है। जिसे भविष्य में मांग अनुरूप 5 हजार लीटर तक वृद्धि की जा रही है। यहां पर पुट्टी और डिस्टेंपर भी बनाई जा रही है। इस पेंट से राजधानी के नगर निगम मुख्यालय की इमारत जोन क्रमांक 8 की इमारत में पोताई की गई है। वहीं दुर्ग जिले के ग्राम लिटिया की ग्रामीण बहनें गांव में ही डिस्टेंपर निर्माण कर रही हैं। डिस्टेंपर यूनिट की निर्माण क्षमता हर दिन हजार लीटर तक की है। उन्होंने इसका विक्रय भी आरंभ कर दिया है। कांकेर जिले के चारामा विकासखण्ड के ग्राम सराधुननवागांव के गौठान में सागर महिला क्लस्टर समूह द्वारा गोबर से पेंट का निर्माण किया जा रहा है, जिससे महिला स्व-सहायता समूह को आमदनी भी हुई है।

छत्तीसगढ़ प्रदेशवासियों को
26 जनवरी 2023 गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ
मान. श्री भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री छ.ग. शासन
मान. डॉ. श्री प्रेमसाय सिंह
केबिनेट मंत्री, छ.ग. शासन
स्कूल शिक्षा, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास
एवं सहकारिता विभाग
छत्तीसगढ़ राज्य में अनुसूचित
जनजाति वर्ग का हित-प्रहरी आयोग
मान. श्री भानुप्रताप सिंह
अध्यक्ष
छ.ग. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग
मान. डॉ. सुश्री राजकुमारी दीवान
उपाध्यक्ष
छ.ग. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग
मान. श्री नितिन पोटाई
सदस्य
छ.ग. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग
मान. श्री गणेश सिंह ध्रुव
सदस्य
छ.ग. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग
मान. श्रीमती अर्चना पोर्ते
सदस्य
छ.ग. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग
मान. श्री अमृत टोप्पो
सदस्य
छ.ग. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग
छ.ग. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग
भगत सिंह चौक के पास, शंकर नगर रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)

R.O.-12302/ 80

छत्तीसगढ़ सरकार

द्वारा

23.5 लाख किसानों से 1 करोड़ 7 लाख 53 हजार मीट्रिक टन की रिकॉर्ड धान खरीदी

किसानों को धान खरीदी का 21,963 करोड़ रुपए का भुगतान

3 वर्षों में सरकार द्वारा किसानों को 16,415 करोड़ रुपए की इनपुट सब्सिडी का असर

बढ़ा किसान, बढ़ा रकबा, खेती अब फायदे का सौदा

कुल उपार्जित धान

2017-18	56.89 लाख मीट्रिक टन
2022-23	107.53 लाख मीट्रिक टन

धान बेचने वाले किसान

2017-18	12.06 लाख
2022-23	23.5 लाख

बेचे धान का रकबा

2017-18	19.36 लाख हेक्टेयर
2022-23	30.14 लाख हेक्टेयर

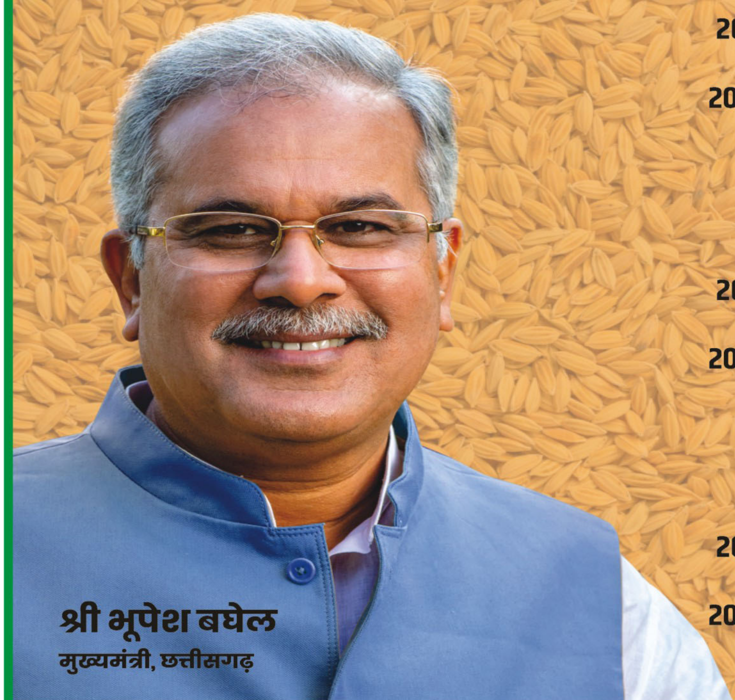

श्री भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprCg.gov.in